आदर्श लघुकथाएँ

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'



संकल्प प्रकाशन

आदर्श लघुकथाएँ

संकलक
डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

ISBN: 978-81-23010-01-3

पुस्तक का नाम

आदर्श लघुकथाएँ

संकलक

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

प्रकाशक:

संकल्प प्रकाशन

वर्ष 2012

मुद्रक:

साक्षी ऑफसेट, कानपुर

AADARSH LAGHUKATHAYEN

By: Dr. Suresh Kumar Mishra 'Uratript' Price: 280/-

दो शब्द

यह मेरे लिए अत्यंत संतोष और गौरव का विषय है कि मैं डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा ‘उरतृप्त’ द्वारा संकलित इस महत्वपूर्ण पुस्तक 'आदर्श लघुकथाएँ' के ‘दो शब्द’ लिखने के लिए आमंत्रित किया गया हूँ। डॉ. ‘उरतृप्त’ जी का नाम हिन्दी साहित्य जगत में किसी परिचय का मोहताज नहीं है; वे न केवल एक सजग साहित्यकार हैं, बल्कि उनकी संवेदनशीलता और गहरी साहित्यिक दृष्टि ने उन्हें एक विशिष्ट पहचान दी है। यह संकलन उनके उसी श्रमसाध्य समर्पण का परिणाम है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में मनुष्य को ठहरकर सोचने, आत्म-मंथन करने और अपने मानवीय मूल्यों को पुनर्जीवित करने के अवसर कम ही मिल पाते हैं। ऐसे समय में, ‘उरतृप्त’ जी ने लघुकथाओं के रूप में जो प्रेरक सामग्री जुटाकर समाज के सामने प्रस्तुत की है, वह एक महत्वपूर्ण साहित्यिक और सामाजिक अनुष्ठान है। उनका यह प्रयास केवल पुस्तकों के पन्नों को भरना नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक पहल है जो पाठकों को जीवन की सच्चाइयों से परिचित कराते हुए उन्हें सकारात्मक दिशा देने का सामर्थ्य रखती है। साहित्य के प्रति उनका यह अनुराग और विधा विशेष के प्रति उनका गहन चिंतन ही इस संकलन को इतना अनूठा और आवश्यक बना देता है। उनकी चयन प्रक्रिया की पारखी दृष्टि प्रशंसनीय है, जिसने इस किताब को विशिष्टता प्रदान की है।

लघुकथा विधा की अपनी एक अनूठी शक्ति और क्षमता होती है। यह विधा, अपनी संक्षिप्तता के बावजूद, गहन और मार्मिक भावों को व्यक्त करने का अद्भुत कौशल रखती है। इसे ‘गागर में सागर’ भरने की कला कहा जाता है, जहाँ एक छोटा सा कथानक, एक तीखा संवाद और एक अप्रत्याशित अंत पूरे जीवन दर्शन को उजागर कर देता है। वर्तमान युग में जहाँ धैर्य कम है और समय का अभाव है, वहाँ लघुकथाएँ पाठक को बिना किसी बोझ के, तुरंत प्रभाव और गहरा संदेश देने में सक्षम होती हैं। ‘प्रेरक लघुकथाएँ’ शीर्षक ही इस बात का प्रमाण है कि ये रचनाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि ये पाठकों के हृदय में नैतिक जागरण और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेंगी। यह विधा सामाजिक विसंगतियों पर सीधे और प्रभावी ढंग से प्रहार करती है। आर्थिक असमानता से लेकर मानवीय

रिश्तों की टूटन तक, जीवन के हर पहलू को यह विधा चंद शब्दों में छू लेती है और पाठक को सोचने पर मजबूर कर देती है। डॉ. 'उरतृप्त' ने इस संग्रह के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया है कि लघुकथा केवल एक लघु आकार की कहानी नहीं है, बल्कि यह समय की माँग है और विचारों की क्रांति का एक सूक्ष्म किन्तु शक्तिशाली माध्यम है।

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त' ने इस संकलन में जिन लघुकथाओं का समावेश किया है, वे गुणवत्ता और वैविध्य के मामले में अद्वितीय हैं। ये कथाएँ जीवन के किसी एक पक्ष तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनमें मानवीय रिश्तों की ऊष्मा, समाज में व्याप्त पाखंड पर व्यंग्य, ईमानदारी की कसौटी और आशावाद का संदेश—सभी कुछ समाहित है। इस संग्रह की प्रत्येक लघुकथा एक दीपक की तरह है, जो अपने छोटे से आलोक से जीवन के अँधेरे कोनों को प्रकाशित करने का प्रयास करती है। इन कहानियों में भाषा की सरलता और शिल्प की कसावट देखने लायक है, जिससे संदेश सीधे पाठक के मन तक पहुँचता है। संकलक की सफलता इसी में निहित है कि उन्होंने विभिन्न शैलियों और विषयों की लघुकथाओं को एक सूत्र में पिरोया है, जिससे यह पुस्तक एक सम्पूर्ण अनुभव बन गई है। कुछ कथाएँ जहाँ आँखों को नम करती हैं, वहीं कुछ मनुष्य को कर्मठ बनने की प्रेरणा देती हैं। यह संग्रह हमें याद दिलाता है कि जीवन में छोटी-छोटी घटनाएँ भी कितने गहरे सबक सिखा सकती हैं, और कैसे साधारण मनुष्य भी अपने आचरण से महानता प्राप्त कर सकता है।

यह पुस्तक उन सभी पाठकों के लिए अनिवार्य पठन सामग्री सिद्ध होगी जो अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना चाहते हैं और मानवीय मूल्यों के महत्व को समझना चाहते हैं। मुझे आशा है कि यह संकलन व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचेगा और अपनी प्रेरणादायी शक्ति से समाज में एक सकारात्मक लहर पैदा करेगा। मैं डॉ. 'उरतृप्त' जी को उनके इस महत्वपूर्ण योगदान के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और इस पुस्तक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ। यह लघुकथा संग्रह अपनी सार्थकता और प्रभाव से हिन्दी साहित्य में अपना स्थायी स्थान बनाएगा।

— रामदरश मिश्र

प्रसिद्ध साहित्यकार

मेरी बात

'आदर्श लघुकथाएँ' आज सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। एक संकलक के रूप में, मैंने इस बात को गहराई से अनुभव किया है कि जीवन की तीव्र गति में, मनुष्य के पास अब विस्तृत उपन्यासों या लंबी कहानियों को पढ़ने का धैर्य कम होता जा रहा है। ऐसे में, लघुकथा विधा एक वरदान बनकर उभरती है, जो अपनी संक्षिप्तता में भी जीवन का गहनतम दर्शन समाहित रखती है।

इस संग्रह का मूल उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं, बल्कि मन की उन सोई हुई भावनाओं को जगाना है, जो हमें मानवता, नैतिकता और सकारात्मकता की ओर प्रेरित करती हैं। मैंने इस पुस्तक में ऐसी लघुकथाओं को चुनने का प्रयास किया है, जो समाज की विसंगतियों पर चोट करती हों, रिश्तों की गर्माहट को दर्शाती हों, और हर परिस्थिति में आशा का दामन न छोड़ने का संदेश देती हों। ये कथाएँ आपको कुछ ही मिनटों में एक सम्पूर्ण यात्रा कराएँगी, जहाँ आप हँसेंगे, भावुक होंगे और शायद थोड़ा रुककर आत्म-चिंतन भी करेंगे।

मैं हृदय से उन सभी यशस्वी रचनाकारों का आभारी हूँ, जिनकी कालजयी रचनाओं को इस संकलन में स्थान मिला है। उनके शब्दों की शक्ति ही इस पुस्तक की वास्तविक पूंजी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'आदर्श लघुकथाएँ' हर उम्र के पाठक को एक नई दृष्टि, एक नई ऊर्जा और जीवन को बेहतर बनाने की एक नई प्रेरणा प्रदान करेगी। मैं आशा करता हूँ कि यह संग्रह आपके निजी पुस्तकालय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनेगा और आपको बार-बार जीवन के मूल्यों को याद दिलाता रहेगा।

— डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'(संकलक)

अनुक्रम

नेवला एवं सांप

एक परिवार में नेवला पला हुआ था। सारे लोग उसकी देखभाल करते और वह भी अत्यंत शालीनता के साथ परिवार में रहता था। एक बार समस्त परिवारीजनों को किसी कार्य से बाहर जाना पड़ा और उन्होंने अपने छोटे बच्चे की देखभाल के लिए नेवला को वहां पर छोड़ दिया।

उसी समय एक सांप वहां बच्चे के पास आ गया। उसे देख कर नेवले ने तुरन्त सांप को मार डाला और बच्चे का जीवन बच गया। परिवार वाले जब वापस आये तो उन्होंने नेवले के मुंह पर खून लगा देखा। उन्हें शक हुआ कि शायद नेवले ने उनके बच्चे को मार डाला है। परिवार वालों ने तुरन्त नेवले को इसकी सजा दे दी, अर्थात् नेवले को बिना छानबीन किये मार डाला। बाद में परिवार वालों को बहुत दुःख हुआ।



गुरुनानक देव जी

बहुत समय पहले एक डाकू गुरु नानकदेव जी के पास आया और चरणोंमें गिर कर बोला – "अब डाकू की जिन्दगी से मैं बहुत दुःखी हूँ और इसे छोड़ना चाहता हूँ। मुझे सही राह दिखाइये। गुरु नानक देव जी ने कहा कि अगर तुम अच्छा इंसान बनना चाहते हो तो चोरी करना व सारे बुरे काम छोड़ दो।

वह पुनः उनके पास आया और बोला – "नानक जी, चोरी करना व सारे बुरे काम मैं छोड़ नहीं पा रहा हूँ।" गुरु नानक जी ने बहुत सोच–विचार कर उससे कहा – "दिन भर झूठ बोलने, चोरी करने और खराब काम करने के बाद, तुम बाद में सबके सामने अपने कार्यों का वर्णन करो।"

यह कार्य भी उससे नहीं हो पाया क्योंकि उसे अपने खराब कार्यों को लोगों से बताने में बहुत तकलीफ होती थी। धीरे–धीरे उसे अपने खराब कार्यों से घृणा होने लगी। एक दिन वह दुःखीमन से गुरु नानक देव जी के पास आया और कहा कि मैं जिस काम को आसान समझ रहा था, वह कठिन था। मुझे अपने ऊपर आत्मग्लानि आती थी। अतः मैंने समस्त गलत कार्य छोड़ दिये है।"



उधार

बहुत समय पहले एक स्कूल के बच्चों ने पिकनिक पर जाने का कार्यक्रम बनाया। सभी बच्चे पिकनिक जाने के लिये बहुत प्रसन्न थे तथा वहाँ खाने के लिये घर से कुछ न कुछ विशेष खाने का सामान लाना चाहते थे। उनमें एक बच्चा अल्प आय परिवार का था। उसने जब घर पर जाकर अपनी माँ से इस कार्यक्रम का जिक्र किया तो उसकी मां उदास हो गयीं। उसने कहा कि हमारे घर में केवल कुछ खजूर रखे हैं, यह सुन कर बच्चा गुमसुम हो गया। तब उसने सारी बात उसके पिताजी को बताई।

माता–पिता ने काफी देर तक इस बात पर विचार किया। यह सब उनका बेटा देख रहा था। उसे खराब लग रहा था कि उसकी पिकनिक की वजह से उसके परिवार वाले चिंता में हैं। पिता जी कहीं बाहर जाने के लिये तैयार हुये, तो बालक ने पूछा। वह बोला – "मैं अपने पड़ोसी से कुछ रूपये उधार लेने के लिये जा रहा हूँ, जिससे हम पिकनिक के लिये कोई खाने की अच्छी चीज खरीद सकें।"

बच्चे ने कहा – पिता जी, उधार मांगना अच्छी बात नहीं है। मैं पिकनिक पर वही लेकर जाऊँगा, जो कुछ हमारे घर में है। उधार लेकर झूठी शान दिखाना शोभा नहीं देता। पिता ने प्यार से अपने बेटे को अपने सीने से लगा लिया। पंजाब का यह सपूत बाद में लाला लाजपतराय के नाम से विख्यात हुआ।



सच्चे का बोलबाला

बहुत समय पहले की बात है। एक बार एक भिखारी का पूरा दिन बुरा गुजरा। दिन भर में उसे लोगों से कुछ भी नहीं मिला। शाम को वह दुःखी मन से घर लौट रहा था कि उसकी नज़र रास्ते में पड़ी एक थैली पर गई। भिखारी ने थैली को उठा कर देखा तो उसमें सोने के सिक्के थे। भिखारी ने गिन कर देखा तो थैली में पूरे सौ सिक्के निकले।

सोने के सिक्के पाकर भिखारी ने सोचा कि ईश्वर ने उसकी मदद के लिए यह उपकार दिया है और अब उसकी गरीबी दूर हो जायेगी, पर अगले ही पल उसने विचार किया कि थैली के मालिक को अपनी थैली के गुम हो जाने का कितना दुःख हो रहा होगा। यह बात मन में आते ही उस ईमानदार भिखारी ने थैली असली मालिक को लौटाने का निश्चय कर लिया।



भिखारी कुछ आगे ही बढ़ा था तो उसे एक व्यक्ति मिला जो बहुत परेशान था। जब भिखारी ने उससे पूछा कि आप क्यों परेशान हैं तो उसने कहा कि मेरी सोने के सिक्कों की थैली खो गयी है, इसलिए मैं बहुत परेशान हूँ। जो भी मुझे थैली वापस कर देगा, उसे मैं इनाम दूँगा। यह सुन कर उस ईमानदार भिखारी ने उसे वह थैली दे दी और व्यापारी तुरन्त वहां से थैली लेकर चल पड़ा। भिखारी ने व्यापारी से कहा कि आप ने तो कहा था कि थैली देने वाले को इनाम देंगे, परन्तु मेरा इनाम तो आपने नहीं दिया। इस पर लालची व्यापारी ने कहा कि मेरी थैली में तो दो सौ सिक्के थे और तुमने सौ सिक्के निकाल लिए। अतः तुम्हें सजा मिलनी चाहिए।

भिखारी ने कहा कि मैं इसके विरूद्ध अदालत में जाऊँगा। व्यापारी बोला – "मैं किसी अदालत से नहीं डरता।" इस प्रकार भिखारी ने अदालत का दरवाजा खटखटाया। दूसरे दिन जज साहब ने दोनों को बुलाया। दोनों अदालत में हाज़िर हुए। जज साहब ने व्यापारी से कई प्रश्न पूछे और पूछा कि तुम्हारी थैली में कितने सिक्के थे।

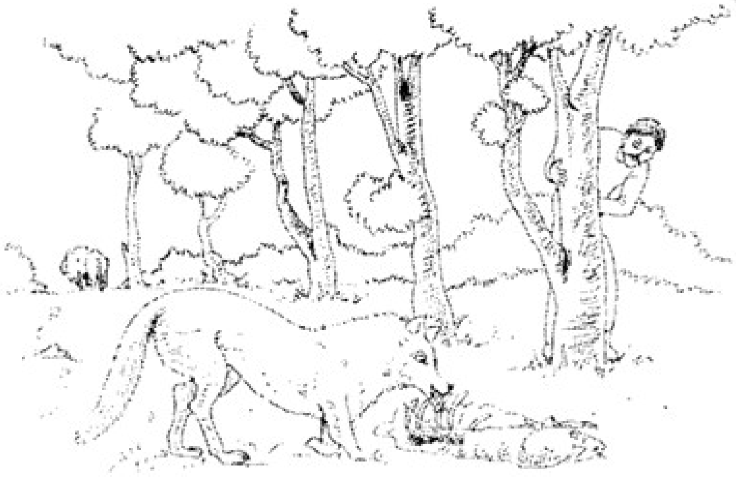
उसने कहा – "दो सौ सिक्के थे।"

इस पर जज साहब ने फैसला सुनाया कि यह थैली व्यापारी की नहीं है और उस थैली को भिखारी को दे दिया क्योंकि उस थैली में तो सौ सिक्के थे। अगर उसे सौ सिक्के हड़पने होते, तो वह थैली ही क्यों लौटाता? इस प्रकार व्यापारी को अपने लालच का फल भुगतना पड़ा।

अपनी सहायता स्वयं करें

एक लोमड़ी जंगल में रहती थी। उसके आगे के दोनों पैर एक दुर्घटना में कट गये थे। एक व्यक्ति उसी लोमड़ी के पास रहता था। उसे यह देख कर आश्चर्य होता कि कैसे लोमड़ी अपने खाने का प्रबन्ध करती है। एक दिन उसने देखा कि एक शेर ने अपना शिकार लेकर, लोमड़ी जहां पर रहती थी, उस के पास आकर खाना शुरू कर दिया। बाद में उसके शिकार का कुछ भाग बच गया, जिसे शेर छोड़ कर चला गया। शेर द्वारा छोड़े गये शिकार को लोमड़ी ने बड़े प्रेमपूर्वक एवं स्वाद लेकर खा लिया। अगले दिन फिर परमपिता परमेश्वर ने शेर को अपने शिकार के साथ वहीं पर भेज दिया। इस प्रकार लोमड़ी को बिना कुछ करे अच्छा व पौष्टिक भोजन प्रतिदिन प्राप्त होने लगा।

पड़ोसी ने इस पूरे प्रकरण पर विचार किया कि कोई दैविक शक्ति जब लोमड़ी को बिना कोई मेहनत किये भोजन उपलब्ध करा सकती है तो इसी प्रकार से मैं भी केवल आराम करूंगा और मुझे भी रोज खाना मिल जाया करेगा। उस व्यक्ति को बहुत विश्वास था। इसी प्रकार एक–एक करके दिन बीतते गये, पर उसे भोजन प्राप्त नहीं हुआ। धीरे–धीरे वह व्यक्ति कमजोर होता गया और ढांचा मात्र शेष रह गया। जब वह बेहोश होने वाला था, उसे एक आवाज सुनाई दी – "ए मनुष्य, तुम्हें शेर का उदाहरण अपने जीवन में उतारना चाहिये न कि विकलांग लोमड़ी का। तुम्हारे पास हाथ–पैर हैं, तब तुम्हें विकलांग बनना शोभा नहीं देता।' पड़ोसी को अब वास्तविक ज्ञान मिल चुका था।



पीपल व नीम

आपने अक्सर देखा होगा कि जंगल के किसी विशाल पेड़ पर कोई अन्य छोटा पेड़ उग आता है। इसका कारण है कि पक्षियों द्वारा प्रायः विभिन्न पेड़ों के बीज दूसरे पेड़ पर डाल दिये जाते हैं, जहां धीरे–धीरे बीज एक छोटे पेड़ का रूप ले लेता है। यह कथा भी इसी प्रकार से है।

एक चिड़िया ने नीम का बीज अपनी चोंच में लाकर पीपल के तने पर डाल दिया। बीज ने नयी जगह पाकर पौधे का आकार ले लिया। धीरे–धीरे पीपल की छाया में छोटे नीम का पेड़ बढ़ने लगा, परन्तु दूसरे पर निर्भर होने के कारण नीम के पेड़ का विकास बहुत कम हुआ। एक दिन नीम के छोटे से पेड़ को अपना आकार न बढ़ने के कारण गुस्सा आ गया।

उसने पीपल से गुस्से से कहा – "तू स्वयं तो आकाश तक पहुंच रहा है, परन्तु मुझे बढ़ने नहीं दे रहा है। "पीपल ने हंस कर कहा – "दोस्त, औरों की दया पर इतना ही विकास हो सकता है। इससे ज्यादा विकास करना है तो अपनी नींव स्वयं बनाओ। "एक दिन तेज आंधी आयी, पीपल के वृक्ष का कुछ नहीं हुआ, परन्तु नीम का पौधा नीचे गिर पड़ा। एक राहगीर उधर से निकला और उसने कहा, किसी बड़े वृक्ष के नीचे छोटे पौधों का भविष्य सर्वथा खतरे में रहता है। जो लोग औरों के साये में बढ़ने की आशा रखते हैं, उनका अंत हमेशा दुःखदायी होता है।

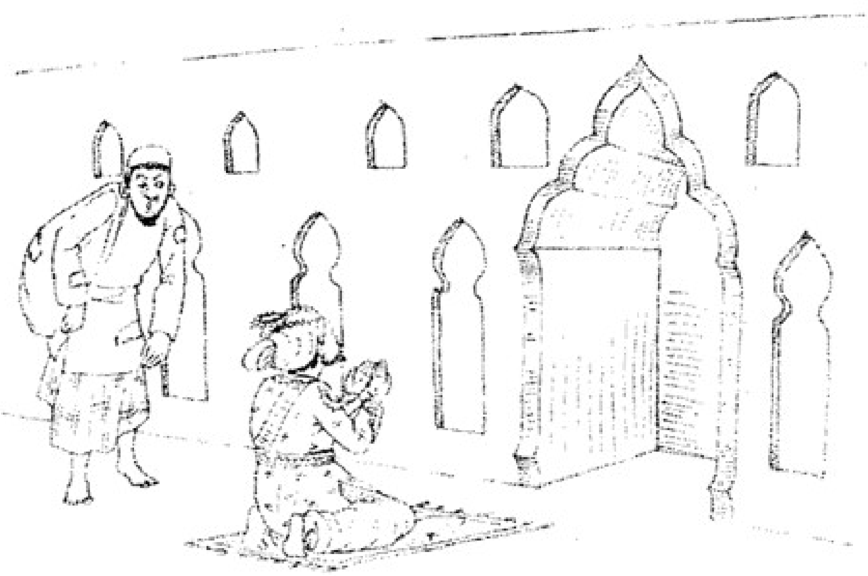


बादशाह और फकीर

एक गांव के लोगों ने उस गांव के सिद्ध फकीर से कहा कि बादशाह तुम्हें बहुत मानता है, उससे कह कर एक मदरसा या स्कूल बनवा दो। उस फकीर ने कहा कि मैंने जीवन में कभी किसी से कुछ नहीं मांगा, किन्तु तुम चाहते हो तो राजा से बात करुंगा। वह फकीर राजधानी गया और बादशाह के द्वार पर सुबह–सुबह पहुंच गया। भीतर जाकर देखा तो बादशाह मस्जिद में घुटने टेके हुए, हाथ फैलाये नमाज पढ़ रहा था।

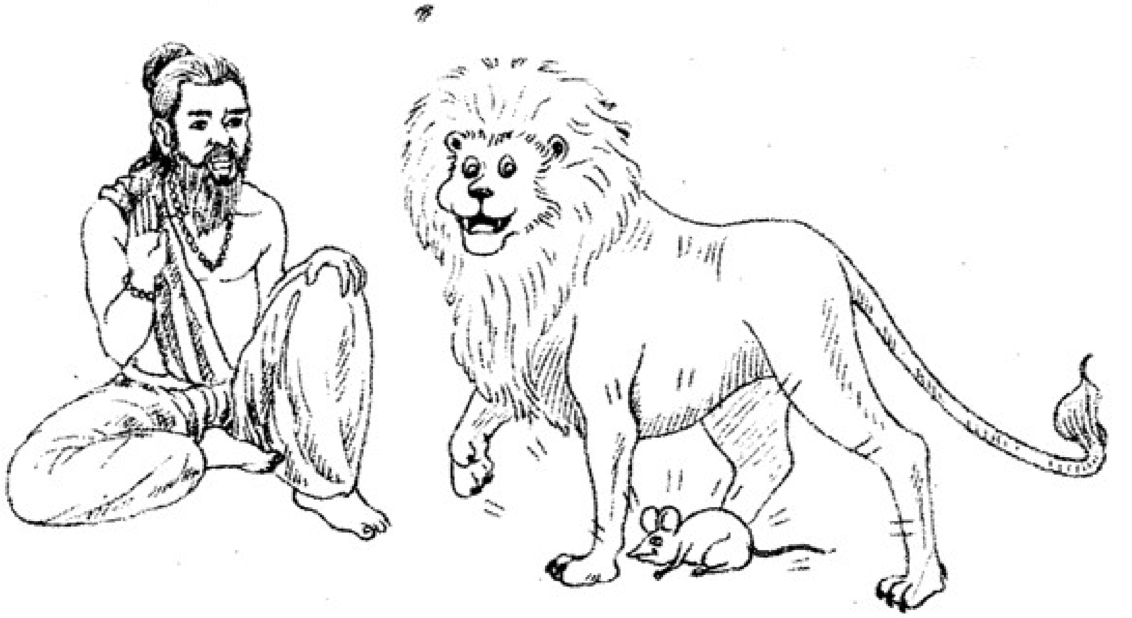
बादशाह ने नमाज के अन्त में कहा कि हे अल्लाह, मुझे और सम्पत्ति दो, मुझे और राज्य दो, मेरी सम्पत्ति को और बढ़ा दो। इतना सुनते ही फकीर एकदम लौट पड़ा। बादशाह उठा तो उसने फकीर को सीढ़ियां उतरते देखा तो वह वहीं से चिल्लाया – ''कैसे आये और लौट चले''?

फकीर ने कहा कि गलती से आ गया। मैं समझा था तुम बादशाह हो, परन्तु यहां आकर पाया कि तुम भी भिखारी हो। तुम भी अभी मांग ही रहे हो। मैं तुमसे कुछ मांगने आया था, परन्तु अब तुम ही मांग रहे हो तो तुमसे मांग कर तुम्हें कष्ट नहीं दूंगा। जिसके खुद के पास ही बहुत कम है, उससे क्या मांगना! अब उसी से मांग लूंगा, जिससे तुम मांग रहे हो, बीच में बिचौलिये को क्यों डालूं?



चूहा और शेर

एक गांव में संत पुरुष के साथ एक चूहा भी रहता था। चूहा धीरे–धीरे संत पुरुष के बहुत करीब हो गया। एक दिन चूहे से संत पुरुष ने कहा – "हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं, तुम जो भी चाहो, हमसे मांग लो।" चूहे ने कहा – "कृपया मुझे शेर बना दीजिये।" संत पुरुष ने अपनी तन्त्र साधना से चूहे को शेर बना दिया। शेर बन कर चूहा अति प्रसन्न हुआ और जंगल में जाकर दूसरे छोटे वन प्राणियों को परेशान करने लगा। जंगल के वन प्राणी शेर से बहुत दुःखी रहते थे। एक दिन वही शेर संत पुरुष की कुटिया में आ गया और उसने संत पुरुष को खाने की सोची। यह देख कर संत पुरुष को बड़ा आश्चर्य तथा दुःख भी हुआ। उसने अपने मंत्रों द्वारा शेर को पुनः चूहा बना दिया।



विश्वास का महत्व

एक गांव में एक विधवा अकेली रहती थी। गांव के सारे लोग उसकी देखभाल तथा उसकी सारी जरूरतें भी पूरा करते थे। गांव वालों ने उस महिला को एक घन्टा दे दिया था, जिसको बजाने पर सभी गांव वाले उसके पास मदद करने आ जाते थे। एक दिन उस महिला ने गांव वालों की परीक्षा लेने के लिये, घन्टा बिना कारण के बजा दिया।

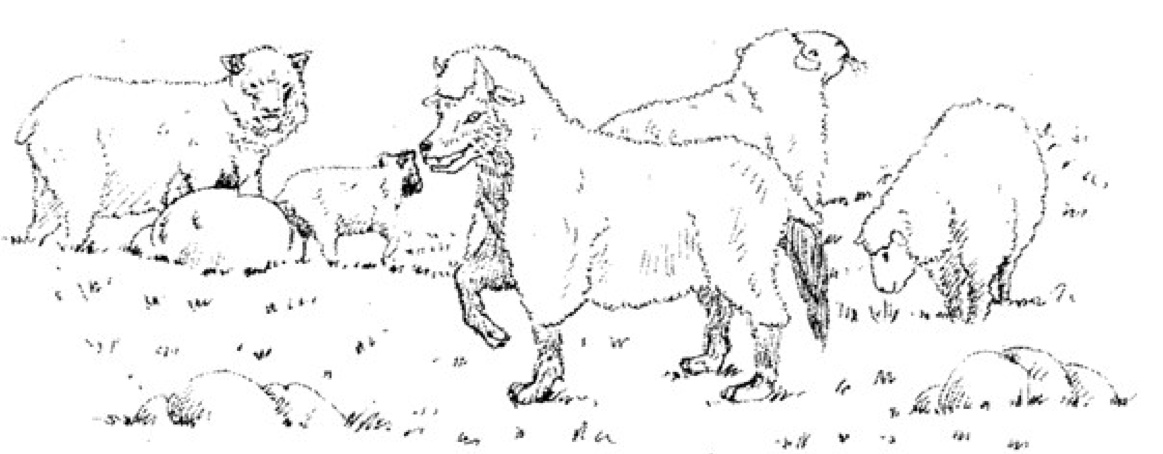
घन्टे की आवाज सुन कर सारे गांव वाले उसकी सहायता करने आ गये। बाद में गांव वालों को पता लगा कि महिला ने बिना कारण घन्टा बजा दिया था। इस पर सभी गांव वाले महिला पर बहुत नाराज हुये और महिला को समझाया। एक दिन वास्तव में एक शेर महिला के घर के पास आ गया। महिला ने जोर–जोर से घन्टा बजाया, परन्तु गांव वाले उसके पास नहीं आये। उन्होंने सोचा कि शायद महिला ने मजाक में बिना किसी कारण के घन्टा बजा दिया है। इसी बीच, शेर ने महिला को मार डाला और उसे अपना भोजन बना लिया।



भेड़िया का मायाजाल

एक गांव में बहुत सारी भेड़ें एक स्थान पर चर रही थी तथा उनका मालिक गड़रिया पास में पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। उसी समय एक भेड़िया आया। उसके पास भेड़ की खाल थी। उसने सोचा कि भेड़ की खाल पहन कर वह भी इन भेड़ों के झुंड में शामिल हो जाये तथा मौका पाकर एक–एक करके भेड़ों को अपना भोजन बना लेगा। इस प्रकार गड़रिया को इसकी जानकारी नहीं होगी।

शाम होने पर गड़रिया सब भेड़ों को लेकर अपने गांव की तरफ चल दिया। भेड़ के झुंड में भेड़िया भी भेड़ की खाल में था। वह भी भेड़ों के साथ गड़रिया के घर पर आ गया। रात में राजा ने अपना एक आदमी गांव भेजा कि गड़रिया से एक मोटी व स्वस्थ्य भेड़ ले आओ, जिसको काट कर मेहमानों के लिए भोजन पकाया जाये। राजा के आदमी ने उस भेड़ को पसन्द किया जो कि असलियत में भेड़िया था। इस प्रकार भेड़िया जो कि लालच में बहरूपिया बना था, की दर्दनाक मौत हो गयी।



रोटी का रंग

यह लघु कथा बहुत पुरानी है एवं लोकप्रिय होने के साथ जन कल्याणकारी.व ज्ञानयुक्त भी है।

एक बार श्री गुरुनानक देव जी अपने संतवचनों की वर्षा करते हुए एक गांव में पधारे। गांव के मुखिया मलिक मांगों और गांव के बढ़ई, लालों, दोनों ने परम श्रद्धेय गुरूदेव को अपने घर भोजन के लिये आमंत्रित किया। गुरुदेव ने गांव के मुखिया के घर न जाकर गांव के बढ़ई के यहां जाकर भोजन प्राप्त किया।

इस पर गांव के लोगों ने गुरुदेव से इसका कारण जानना चाहा। गुरुदेव ने मुखिया के घर से रोटी मंगाई और रोटी को जोर से निचोड़ा। रोटी में लाल खून जैसा पदार्थ बहने लगा। फिर गुरुदेव ने बढ़ई के घर से रोटी मंगाई और उसे भी निचोड़ा तो रोटी से दूध बहने लगा। एक रोटी दूसरों की मेहनत का लाभ उठा कर कमाई गयी थी और दूसरी अपनी मेहनत की थी।



मगरमच्छ एवं बन्दर की मित्रता

एक नदी किनारे मगरमच्छ व बन्दर में बहुत मित्रता थी। दोनों एक साथ खेलते व खाते थे। दोनों की मित्रता से वन के अन्य जीवों को बड़ी ईर्ष्या होती थी। एक दिन मगरमच्छ की पत्नी ने कहा कि मुझे बन्दर का दिल खाना है। पहले तो वह नहीं माना, पर पत्नी के आगे उसकी नहीं चली।

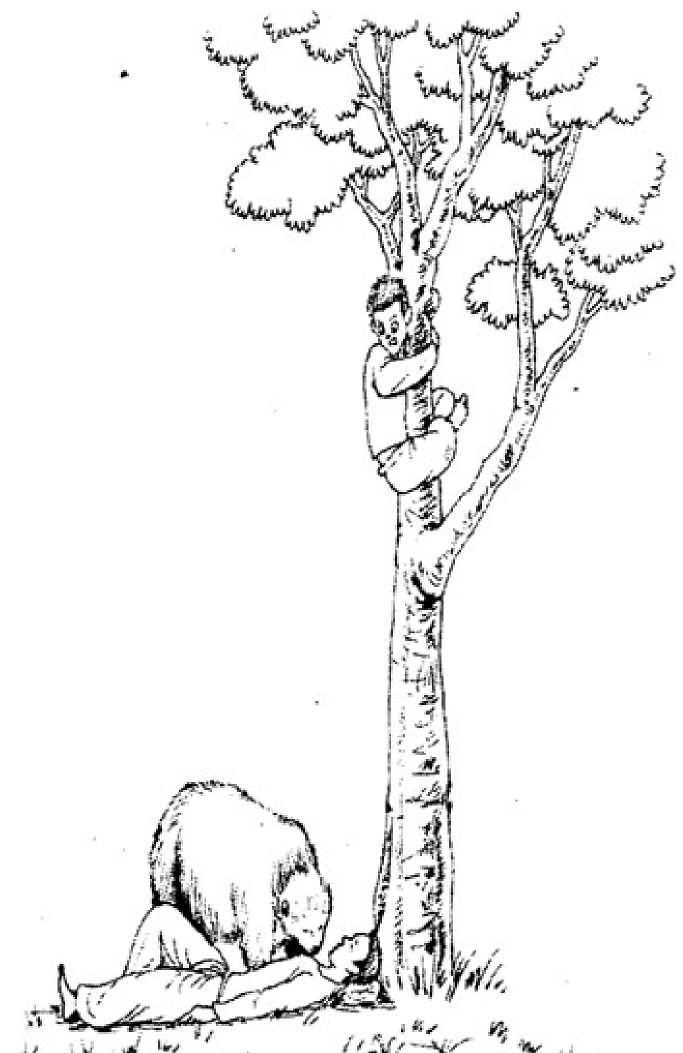
मगरमच्छ ने बन्दर से कहा – "तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ। आज मैं तुम्हें तालाब की सैर कराऊँगा। तालाब के बीच में पहुँच कर मगर ने अपनी पत्नी की इच्छा बन्दर को बताई कि मेरी पत्नी तुम्हारा दिल खाना चाहती है।

यह सुन कर बन्दर अन्दर ही अन्दर भयभीत हो गया पर तुरन्त उसने अपनी जान बचाने की युक्ति बना ली। बन्दर ने बहुत प्यार से मगरमच्छ को बताया – "मैं अपना दिल पेड़ पर छोड़ आया हूँ। अतः तुम वापस किनारे पर चलो और फिर मैं पेड़ से अपना दिल लाकर तुम्हें दे दूँगा।" मगरमच्छ बन्दर को किनारे पर ले आया। बन्दर कूद कर पेड़ पर चढ़ गया और उसने अपनी जान बचा ली।



दो मित्रों की कहानी

एक बार जंगल में दो मित्र जा रहे थे। दोनों बहुत अच्छे मित्र थे। एक साथ पढ़ते व खेलते थे। जंगल बहुत घना था। रास्ते में उन्हें बहुत बड़ा भालू मिला। एक मित्र जल्दी से पेड़ पर चढ़ गया, परन्तु दूसरे मित्र को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था। उसे लगा कि अब भालू मुझे मार कर खा जायेगा। यह सोच कर वह भयभीत हो गया, तभी उसके मन में एक युक्ति आयी और वह पेड़ के नीचे आंखें बन्द करके बेजान होकर लेट गया और उसने अपनी सांस भी रोक ली। भालू उसके चारों तरफ टहला, फिर नजदीक से उसे सूंघने के लिये अपना मुंह कान की तरफ कर दिया। जब भालू आश्वस्त हो गया कि यह व्यक्ति जिन्दा नहीं है तो उसे छोड़ कर जंगल में विलीन हो गया।



थोड़ी देर बाद उसका दूसरा मित्र ऊपर से उतर कर नीचे आया और उसने पूछा – "यह भालू तुम्हारे कान में क्या कह रहा था"?

मित्र ने जवाब दिया – 'दगाबाज दोस्त पर कभी विश्वास न करो।'

महाभारत एवं श्रीकृष्ण

यह दृष्टांत महाभारत के समय का है। दोनों तरफ अर्थात पांडव व कौरवों की सेना अपने–सामने थी। दोनों पक्ष अर्जुन एवं दुर्योधन, भगवान कृष्ण से उनकी मदद के लिए गये। दुर्योधन श्रीकृष्ण के सामने व अर्जुन उनके चरणों की तरफ आकर नतमस्तक होकर खड़े हो गये। श्रीकृष्ण की निगाहें सर्वप्रथम अर्जुन पर गयीं। अर्जुन ने उनसे युद्ध में सहायता के लिए विनीत स्वर में प्रार्थना की।

अर्जुन ने कहा – "दुर्योधन भी आये हैं, अतः पहले इनको ही मांगने दें।"

दुर्योधन ने कहा – " मुझे युद्ध जीतना है, अतः आप अपनी सेना हमें दीजिए।"

अर्जुन ने कहा – "मुझे आपकी सेना व अस्त्र–शस्त्र नहीं चाहिये, मुझे केवल आप चाहिए।"

अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण से केवल एक ही चीज मांगी कि आप मेरे रथ के सारथी बन जाईये। मुझे जहाँ जाना चाहिये, वहाँ ले जाने वाले आप (भगवान) बन जाईये।



अकबर और बीरबल

अकबर ने अपने सबसे चतुर व बुद्धिमान माने जाने वाले मन्त्री बीरबल को एक काम कराने के लिये किसी राजा के पास भेजा। बीरबल ने उस राजा की प्रशंसा के पुल बांध दिये। बीरबल ने इस प्रकार राजा की तारीफ करते हुये कहा – "हे राजा, कहाँ आप और कहाँ अकबर? आप तो पूनम के चांद जैसे हो। जबकि अकबर तो दूज के चांद जैसे हैं।"

बीरबल के साथ आये अकबर के दरबारी ने यह बात अकबर को बता दी। अकबर यह जान कर अत्यंत नाराज हुये और बीरबल को तुरन्त बुलाया गया। बीरबल ने अपनी सफाई इस तरह से पेश की?

"जहाँपनाह, हम सब अपना सिर दूज के चांद को झुकाते हैं, पूनम के चांद को नहीं। मेरा पूनम के चांद का तात्पर्य है कि अब तुम्हारी ढ़लने के बारी है और हमारे शहंशाह तो दूज के चांद हैं। दूज के चांद को तो प्रतिदिन बढ़ना है।"

अकबर यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और बीरबल को गले लगा लिया।



नास्तिक

बहुत समय पहले गुरूजी से एक नास्तिक व्यक्ति ने पूछा – "ईश्वर की कल्पना कुछ अंधविश्वासियों ने की है। मुझे इसमें विश्वास नहीं होता, चूंकि हम उसी पर विश्वास करते हैं जो दिखाई देता है। मैंने बहुत कोशिश की परन्तु ईश्वर दिखाई नहीं दिया। "गुरू जी ने पूछा – "वत्स, क्या तुम्हारे पास दिमाग है"। व्यक्ति ने कहा – "हाँ"।

"क्या तुम दिमाग को देख सकते हो"।

"मुझे तो दिखाई नहीं दे रहा!"

"क्या तुम्हें हवा, सुगंध, भावना, विचार, गर्मी, सर्दी दिखाई देती है?"

"नहीं"

गुरू जी ने कहा हमें हवा, नमी, गर्मी, सर्दी, सुगंध की अनुभूति होती है। ठीक इसी तरह हमें ईश्वर की अनुभूति भी होती है।



किसान व कुआँ

एक गांव में किसान को अपने खेतों को सीचने के लिये कुंए की आवश्यकता हुई। उसने एक जगह स्वयं खुदाई की परन्तु दस–बारह फुट खोदने पर भी पानी नहीं मिला। फिर वह उदास हो गया। तभी उसे एक राहगीर ने सलाह दी कि वह फिर से कहीं और कुएं खोदने का काम करे। किसान ने राहगीर का परामर्श मान कर कुआं खोदना प्रारम्भ कर दिया। वहां भी दस–बारह फुट खोदने पर सफलता नहीं मिली। इस प्रकार किसान ने लोगों के कहने पर दसियों जगह दस–बारह फुट गहरे कुंए खोद डाले पर पानी नहीं प्राप्त हुआ। वैसे तो किसान बहुत थक गया था, फिर भी, उसने हार नहीं मानी और पुनः हिम्मत करके एक ही कुंए को और गहरा करने का प्रयास किया। कुछ ही देर में उसे पानी प्राप्त हो गया। इस प्रकार किसान बहुत प्रसन्न हुआ।



गुरु के प्रति भक्ति

एक बार गांव के एक अनाथ बालक मगरू को हाथ भर की छड़ी को ऊपर उछालने और उसके एक सिरे को मुंह में पकड़ने का शौक लग गया। कई बार उसके अभ्यास करने में चोट आयी और इस कला में उसे सफलता नहीं मिली। एक कुशल संन्यासी ने उसे इस तरह के करतब करते देख कर कहा – "'साधना की सफलता के लिए गुरु का होना अत्यन्त आवश्यक है।"

मगरू ने पूछा कि मैं किसे अपना गुरु बनाऊँ। क्या आप मेरे गुरू बनेंगे? उस संन्यासी से कला सीख कर मंगरू कुशलता से करतब करने लगा। धीरे–धीरे वह चाकू व तलवार मुँह से पकड़ने लगा। राजा के यहाँ पर एक प्रतियोगिता में भी उसने तरह–तरह के करतब दिखाये।

राजा अत्यन्त प्रसन्न हुए और उससे पूछा कि इस प्रकार की कला तुमने किससे सीखी। मंगरू ने कहा कि मुझे अभ्यास करते–करते ये कलाएं आ गयीं, परन्तु गुरु का नाम नहीं बताया। वह सोचने लगा कि इससे गुरु की प्रशंसा होने लगेगी और उसका कहीं नाम भी नहीं आयेगा।

इसी बीच रानी ने एक बार फिर मंगरू से आश्चर्यचकित करतब दिखाने को कहा। कला में पारंगत मंगरू ने तलवार उछाल दी, लेकिन इस बार उसने ऐसे तलवार उछाल दी कि तलवार उसके दाँतों के बजाय उसकी आंख पर आकर गिरी। मंगरू पर अभिमान सवार था। गुरूकृपा साथ न थी और वह अन्धा हो गया।



ज्ञान का मर्म

बहुत समय पूर्व एक गुरूजी थे। उन्होंने अपने प्रिय शिष्य को ज्ञान और कर्तव्य की महिमा बताने के लिये अपने पास बुलाया और कहा – "तुम्हारी गुरुकुल की शिक्षापूर्ण हो गयी है। अब तुम्हें जीवन में कर्तव्य मार्ग पर चलना है। इसलिए तुम एक दिन मेरे साथ रहो"।

अगले दिन गुरू अपने शिष्य को लेकर भ्रमण पर निकले तथा काफी दूर चल कर एक खेत में पहुंचे। वहां देखा कि किसान अपने खेत में सिंचाई कर रहा है तथा बड़ी जतन से खेती के कार्यों में व्यस्त है। किसान को उन लोगों के आने का आभास भी नहीं हुआ तथा अपने काम में निरंतर लगा रहा।

कुछ समय के बाद दोनों एक शहर की तरफ गये। वहां उन्होंने देखा कि लोहार गर्म लोहे को पीट–पीट कर नया आकार दे रहा है। उसका शरीर पसीने से भीग रहा है, फिर भी, वह अपने काम में इतना व्यस्त है कि उसे गुरू व शिष्य को देखने का मौका ही नहीं है।

शाम होने पर दोनों एक धर्मशाला में पहुंचे। वहां उन्होंने तीन अन्य पथिकों को देखा जो कहीं दूर से आ रहे थे। काफी थके हुये थे और अब



वहीं रात गुजरने के लिए ठहरे थे। सब लोगों ने भोजन ग्रहण किया और सोने का प्रयत्न करने लगे।

प्रश्न : गुरु ने शिष्य से क्या कहा?

उत्तर : गुरु ने शिष्य से कहा – कुछ पाने के लिए समर्पण जरूरी है। किसान दिन–रात मेहनत करता है तब जाकर अनाज पैदा होता है। लोहार पसीने–पसीने होकर धातु को आकार दे पाता है। यात्री अपने को निःशेष कर देता है, तब जाकर लक्ष्य की प्राप्ति होती है। मेरे प्रिय शिष्य, शिक्षा के उपरान्त, अपने कर्मो से ज्ञान की क्यारियाँ सींचो, जीवन की आंच से धातु को सिद्ध करो तथा मार्ग में अपने को समर्पित करके ज्ञान की मंजिल प्राप्त करो। ज्ञान किसी का अपना नहीं होता। जो उसे कमाता है अर्थात् अर्जित करता है, उसी के पास (ज्ञान) आता है। यही शिक्षा का मर्म है।

ईश्वर से क्या मांगे

एक जंगल में एक महात्मा जी रहते थे। वह अपना सम्पूर्ण समय ईश्वर की आराधना में लगाते। उनके पास उनका शिष्य आया और उसने महात्मा जी से जानना चाहा, अगर मुझे ईश्वर मिल जाये तो मुझे उनसे क्या मांगना चाहिए।

महात्मा जी ने कहा – "परमार्थ का धन"

फिर शिष्य ने पूछा – "अगर ईश्वर ने इसके लिए अतिरिक्त कोई वस्तु मांगने को कहा, तब?"

महात्मा जी ने कहा – "अपने पसीने के श्रम की कमाई।

शिष्य ने पूछा – "तीसरी वस्तु"

महात्मा जी ने कहा – "उदारता"

चौथी वस्तु – "शर्म"

पांचवीं वस्तु – "अच्छा स्वभाव"

इसके अलावा कुछ और मांगने को कहने पर महात्माजी ने क्या उत्तर दिया?

महात्मा जी ने कहा कि जिस बन्दे को परमार्थ का धन, अपने पसीने की आय, उदारता, शर्म और अच्छा स्वभाव प्राप्त हो जाये तो उसके लिये और मांगने को कुछ भी नहीं बचेगा।



यही जीवन में आनन्द का मार्ग है।

आचार्य चाणक्य

महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य आचार्य चाणक्य के साथ, जो मौर्य साम्राज्य के महामंत्री थे, परामर्श कर रहे थे। उसी समय प्रधान शिल्पकार, जिनके द्वारा महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य के राजमहल का निर्माण किया जा रहा था, राजमहल में उपस्थित हुआ। यह शिल्पकार यूनान का था। उसने महाराज से कहा कि कृपया आप अपने नवनिर्मित राजमहल का निरीक्षण करने की कृपा करें। पाटलीपुत्र में यवन शैली का यह पहला राजमहल बन रहा था और निर्माण कार्य के समय साम्राज्य के किसी भी व्यक्ति का प्रवेश निषेध था।

थोड़ी देर में महाराज अपने समस्त वज़ीरों के साथ वहाँ पहुंच गये। तभी चाणक्य ने देखा कि कुछ चीटियां निरंतर कच्चे चावल लिये एक छेद से निकल कर वाटिका की तरफ जा रही है। यह देख कर आचार्य चाणक्य वहीं रुक गये और आदेश दिया कि महाराज जिस द्वार से आये हैं, तुरन्त बाहर निकल जायें।

शिल्पकार ने बड़ी विनय मुद्रा में कहा कि महाराज, क्या मुझसे कोई गलती हुई है। महाराज ने कहा कि गलती मुझसे हुयी है कि हम बिना



गृह पूजन किये हुये महल में प्रवेश कर रहे हैं जो उचित नहीं है। तुरन्त पूजा के लिए राजपुरोहित को बुलाया गया। राजपुरोहित ने कहा कि भवन–पूजन से पहले भवन को रिक्त करना होगा।

शिल्पकार बहुत दुःखी हुआ और उसने कहा कि केवल एक बार प्रवेश कर निरीक्षण कर लिया जाये। तब चाणक्य ने कहा कि एक उपाय है। इस महल में हाथी प्रवेश कराया जाये। यह सुन कर शिल्पकार को बहुत खराब लगा। तभी आचार्य ने निर्देश दिये कि शिल्पकार को बन्दी बना लिया जाये। जैसे ही हाथी ने अन्दर प्रवेश किया, वह सतखण्डा विशाल राजमहल बालू की तरह गिर गया। यवनों के सैनिक जो वंहां इसी बात का प्रतीक्षा कर रहे थे, कूद पड़े और घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया। सारे भवन के सैनिक बन्दी बना लिये गये और एक बार फिर आचार्य चाणक्य की बुद्धि व चतुरता से सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य को जीवन दान मिला।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

यह दृष्टांत आजादी से पहले 1844 का है, जब बंगाल के ईश्वरचन्द्र विद्यासागर संस्कृत के प्रकांड विद्वान के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे। उनमें नम्रता, सरलता, सहजता, परोपकार व सच्चाई जैसे गुणों का कोई ओर छोर न था। सभी लोग बहुत स्नेह से उनका सम्मान करते थे। कोलकाता के संस्कृत कॉलेज में संस्कृत व्याकरण के अध्यापक का पद रिक्त हुआ। कॉलेज की विद्वत परिषद ने सर्वसम्मत से ईश्वरचन्द्र विद्यासागर को उक्त पद पर कार्य करने के लिये बड़े आग्रह से निमंत्रण पत्र भेजा। इस पद को ग्रहण करने से उन्हें अच्छा वेतन व सम्मान मिलता, परन्तु उन्होंने पत्र पढ़ कर बड़ी शालीनता से अपनी असहमति लिख कर भेज दी। उन्होंने लिखा – "व्याकरण पढ़ाने के लिये मैं इस नगर का योग्यतम व्यक्ति नहीं हूँ। इस विषय में हमसे अधिक विद्वान मेरे परम मित्र श्री तारकनाथ वाचस्पति हैं। यदि आप उनकी नियुक्ति कर सकें तो कहीं बेहतर होगा।"

यह पत्र कालेज प्रबन्धक के पास पहुंचा। प्रबंधक ने पत्र पढ़ा और पत्र पढ़ते ही श्रद्धा से उनका शीश झुक गया। वह सोचने लगे कि यह व्यक्ति कितना महान है। इसे अपने ज्ञान का थोड़ा सा भी अहंकार नहीं है। इसे सम्मान व धन पाने का भी लोभ नहीं है। इस प्रकार कॉलेज प्रबन्धन ने उनका आग्रह मान लिया। वाचस्पति महोदय को जब यह प्रस्ताव प्राप्त हुआ तो उन्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उन्होंने इस पद के लिये आवेदन भी नहीं किया था। बाद में वाचस्पति पूरी घटना की जानकारी पाकर श्री विद्यासागर के घर गये और उन्होंने कहा – ईश्वर, तुम्हारी जैसी मित्रता पाकर मुझे गर्व है। मैं यह सोच नहीं सकता था कि आज भी इस जगत में तुम्हारे जैसे विनम्र और परोपकारी व्यक्ति मौजूद हैं।"



महात्मा गांधी के विचार

यह दृष्टांत उस समय का है, जब सारे लोग देश को आजाद कराने के लिए कृतसंकल्प थे। ऐसे समय महात्मा गांधी ने एक महारैली को सम्बोधित करते हुए कहा – "मैं चाहता हूँ कि सब लोग भारत की आजादी के लिए मिल–जुल कर तन, मन और धन से इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग दें। हर व्यक्ति से चार आने की दक्षिणा चाहता हूँ। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति इस यज्ञ में अपनी आहुति अवश्य सुनिश्चित करें।

बिड़ला जी महात्मा गांधी के परम भक्त व अनुयायी थे। उनसे न रहा गया और उन्होंने कहा – "आपको देश की आजादी के लिये जितना धन चाहिये, मैं देने को तैयार हूँ। इन चार–चार आने से क्या बनेगा और कहाँ तक आप इकट्ठा करते रहेंगे?"

महात्मा गांधी मुस्कराये और कहा – "बात पैसों की नहीं है।"

जब आदमी चार आने देता है तो इसका तात्पर्य है कि उसने अपनी भावना दी है। इस प्रकार सारा समाज खड़ा हो जायेगा। एक व्यक्ति आवाज दें और सारे लोग पीछे चलें तो परिणाम होगा कि अंग्रेजों के राज्य में भले ही सूर्य न डूबता हो, लेकिन वह इतनी बड़ी ताकत भी नहीं है कि उन्हें हिलाया न जा सके। उनको भी हिलाया जा सकता है, लेकिन इसके लिए देश को तुम सबकी एकजुट ताकत की आवश्यकता है।



आत्मज्ञान की जिज्ञासा

बहुत समय पूर्व महायोगी श्यामाचरण लाहिड़ी के पास एक व्यक्ति आया और उसने आत्मज्ञान व साक्षात्कार पाने के लिये उपाय पूछा। लाहिड़ी महोदय ने उसकी बात रखते हुये कहा – "वत्स, तुम्हें एक वर्ष मौन रहते हुये एक मंत्र का जाप एकांत में लगातार करना है। उसके पश्चात् स्नान आदि करके मेरे पास आना, तब हम तुम्हें आत्मज्ञान का उपाय बतायेंगे।

एक वर्ष बाद समस्त बतायी गयी क्रियाओं को करने के पश्चात् व्यक्ति संत के पास आया। आने की जानकारी मिलने पर संत ने एक महिला सफाईकर्मी को पहले से बता दिया कि वह साधक को जरा सी झाडू छुआ दे और थोड़ा सा कचरा भी उस पर डाल दे।

शरीर पर कचरा पड़ते ही साधक आग बबूला हो गया और महिला को मारने दौड़ा। किसी तरह महिला ने अपनी जान बचायी। साधक संत



के पास पहुंचा और उसने एक वर्ष तक किये गये तप का बखान किया। संत ने कहा – ''वत्स, तुम अभी भी सर्प की तरह क्रोधित हो, तुम्हें साधना का प्रथम पाठ भी अभी याद नहीं हुआ है। अतः तुम पुनः उसी प्रकार एकांत में जाकर एक वर्ष तक मौन रह कर मंत्र का जाप करो। एक वर्ष पूर्ण होने पर फिर मुझसे मिलना।''

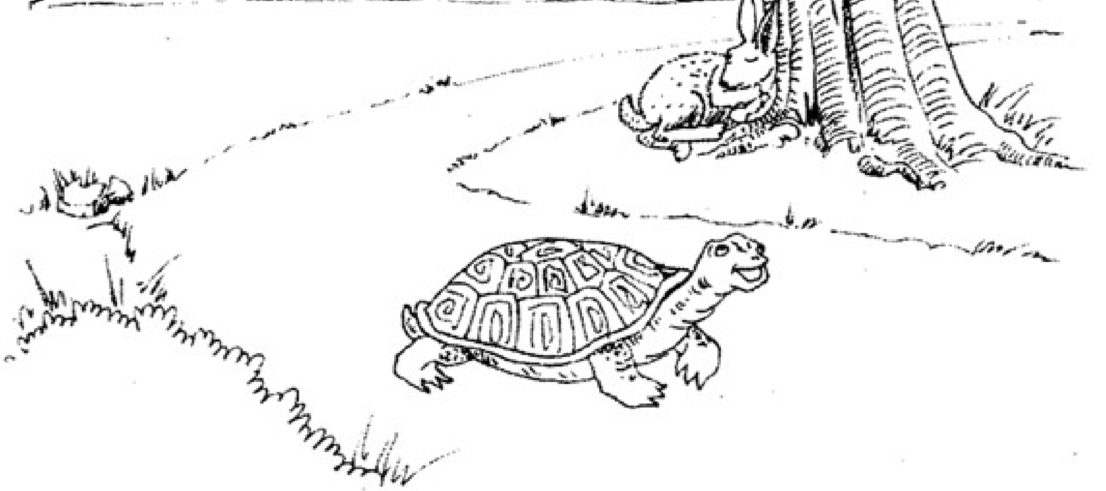
साधक में आत्मज्ञान पाने की लगन थी तथा लाहिड़ी महाशय की योगशक्ति पर उसे विश्वास था। अतः पहले वर्ष की भांति वह पुनः दूसरे वर्ष भी एकांतवास करते हुये, मौन रहते हुये मंत्र का जाप पूरे मनोयोग से करते रहे। एक वर्ष पूर्ण होने पर पुनः साधक संत के पास गया। संत ने उसी महिला से दोबारा साधक पर कचरा डालने के लिये कहा। इस बार साधक पहले के अनुसार कम नाराज हुआ तथा कुछ कटु शब्द महिला को कह दिये।

साधक ने संत से पुनः अपनी प्रार्थना दोहरायी। संत ने कहा – ''अभी तुममें आत्मज्ञान प्राप्त करने की योग्यता पूरी तरह नहीं हुई है। अतः वत्स, आप एकांत में पुनः एक वर्ष तक मंत्र का जाप करें। साधक शांति से अपने स्थान पर लौट गया एवं फिर से साधनारत हो गया। तीसरा वर्ष पूर्ण होने पर साधक गंगास्नान करके महायोगी जी के पास पहुंचा। संत ने पुनः महिला से कचरा उस पर गिरवा दिया। साधक ने कहा – ''माँ, तुमने मुझ पर बड़ा उपकार किया है। तुमने तीन वर्षों से मेरे अन्तःकरण में छिपे क्रोधरूपी शत्रु का नाश करने में मेरी सहायता की है। अब तुम्हारी कृपा से मैं मुक्त हो गया हूँ।

कछुआ व खरगोश

बहुत समय पूर्व एक जंगल में एक कछुआ और खरगोश में अच्छी मित्रता थी। दोनों साथ–साथ रहते व खेलते थे। एक दिन खरगोश ने, जिसे अपनी तेज चलने की कला पर बहुत गर्व था, कछुआ से कहा – "चलो, एक दिन हमारी तुम्हारी दौड़ने की स्पर्धा हो जाये।"

दोनों एक स्थान से साथ–साथ दौड़ में शामिल हुए। कछुआ धीरे–धीरे चल पाता था, अतः खरगोश तेजी से दौड़ कर एक पेड़ के नीचे बैठ कर कछुआ का रास्ता देखने लगा। तभी पेड़ की छाया में उसे नींद आ गयी। उसे विश्वास था कि थोड़ी देर सोकर फिर वह तेज रफ्तार में दौड़ कर अपने गंतव्य स्थान पर कछुआ से पहले पहुंच जायेगा। कछुआ अपनी मन्द गति से लगातार धीरे–धीरे गन्तव्य स्थान की ओर चला जा रहा था और अन्त में वह गन्तव्य स्थान पर उससे पहले पहुंच गया। चूंकि खरगोश अभी तक अपने अहंकार में सो रहा था, इस कारण कछुआ ने दौड़ जीत ही ली।



माँ की महानता

एक समय स्वामी विवेकानन्द से उनके अनुयायी ने प्रश्न किया कि माता को इस पृथ्वी पर सबसे अधिक महान क्यों कहा जाता है। स्वामी जी ने मुस्कराते हुए उससे लगभग पांच किलो का एक पत्थर लाने को कहा। स्वामी जी ने अपने भक्त से कहा – "अब तुम इस पत्थर को अपने पेट पर कपड़े से बांध लो और अपने समस्त कार्य इसी प्रकार एक दिन और रात करो और फिर मेरे पास आओ।"

स्वामी जी के निर्देशानुसार उसने पत्थर को अपने पेट पर बांध लिया और दिन भर अपना कार्य करता रहा। उसे हरदम अत्यंत थकावट और परेशानी महसूस हुई। आठ–नौ घंटे में ही उसका बुरा हाल हो गया और उससे चला नहीं जा रहा था। वह उसी समय स्वामी जी के पास गया और कहा – "अब हमें पत्थर बर्दाश्त नहीं हो रहा है। मैं और ज्यादा पत्थर बांधे नहीं रख सकता।"

स्वामी जी ने कहा कि पेट पर बंधे हुए इस पत्थर का बोझ तुमसे आठ–नौ घंटे नहीं उठाया जा रहा है और माता अपने गर्भ में पलने वाले शिशु को पूरे नौ महीने रखती है। घर का समस्त कार्य करती है। इस कार्य को माँ प्रसन्नतापूर्वक करती है। कभी विचलित नहीं होती है। संसार में माता के अतिरिक्त कोई इतना धैर्यवान व सहनशील नहीं है। इसीलिए माता से बढ़ कर इस संसार में कोई भी महान नहीं है।



जीवन का रहस्य

एक लोककथा के अनुसार मनुष्य को लम्बी आयु का जीवन इस प्रकार प्राप्त हुआ। ईश्वर ने सर्वप्रथम गाय को बनाया और आदेश दिये, तुम पृथ्वी पर जाकर किसान के साथ खेत पर काम करो, बछड़े पैदा करो सफलतापूर्वक दूध दो। इस प्रकार किसान की सहायता करने के लिये साठ वर्ष की आयु दे दी। गाय ने कहा – यह जीवन तो बहुत कष्टकारक होगा, इसे कम करके मेरे जीवन के चालीस वर्ष किसी और को कृपया दे दीजिये।

ईश्वर ने कहा – "ऐसा ही हो"।

दूसरे दिन ईश्वर ने कुत्ते की रचना की और उससे कहा – तुम दिन भर घर के दरवाजे पर बैठो और हर अपरिचित पर भौंकते रहो। इस प्रकार के जीवन के हम बीस वर्ष तुम्हे देते हैं। कुत्ते ने कहा – "भौकने के लिये दस वर्ष बहुत है। कृपया शेष दस वर्ष किसी और को दे दीजिये।"

ईश्वर ने कहा – "ऐसा ही हो"।



तीसरे दिन ईश्वर ने बन्दर की रचना की और कहा तुम लोगों का मनोरंजन करो। आदमी की नकल करो, जिससे लोगों का मनोरंजन हो और उनको हंसने का अवसर मिले। इस कार्य के लिए हम तुम्हें भी बीस वर्ष का समय देते हैं। बन्दर ने मायूस होकर कहा – "बीस वर्ष तक लोगों की नकल बनाते रहता अत्यंत कठिन कार्य है। कुत्ते की तरह हम भी अपने जीवन के दस वर्ष छोड़ते हैं।"

ईश्वर ने कहा – "ऐसा ही हो।"

चौथे दिन ईश्वर ने मनुष्य की रचना की और उससे कहा – "पृथ्वी पर जाकर, खाओ, सोओ, खेलो। कोई काम नहीं करना, केवल आनन्द लो। इसके लिये हम तुमको भी बीस वर्ष का कार्यकाल देते हैं।"

मनुष्य ने कहा कि इतने सारे कार्यो के लिये बीस वर्ष बहुत कम है। मुझे गाय द्वारा छोड़े गये चालीस वर्ष, कुत्ते व बन्दर द्वारा छोड़े गये दस–दस वर्ष का जीवनकाल भी हमारे जीवन काल में ज़ोड़ दे।

ईश्वर ने कहा – "ऐसा ही हो।"

अब मनुष्य जीवन के प्रथम बीस वर्ष केवल खाता है, सोता है, खेलता है। जीवन का आनंद लेने के साथ कोई भी कार्य नही करता। अगले चालीस वर्ष परिवार के गुलाम की तरह गृहस्थी की नाव खींचता (गाय की तरह) है। इसके बाद मनुष्य अपने नाती–पोतों को बन्दर की तरह नकल कर उनका मनोरंजन करता रहता है। जीवन के अंतिम दस वर्षों में मनुष्य कुत्ते की भांति घर के बाहर दरवाजे पर बैठ कर रखवाली करने के साथ–साथ, आने–जाने वाले लोगों पर अनावश्यक रूप से भौंकता है।

उचित से अधिक की आकांक्षा

ईमानदारी और मेहनत से काम करने वाले, नैतिक मूल्यों को अपना कर कीर्तिनिष्ठ जीवन व्यतीत करने वाले भले ही धीमी गति से प्रगति करते हों, परन्तु उनकी प्रगति ठोस होती है तथा उनका सुयश देशकाल की सीमाओं को लाँघ कर विश्वव्यापी और अमर हो जाता है।

अंग्रेजी के प्रसिद्ध साहित्यकार जार्ज बर्नार्ड शा को कौन नहीं जानता? उन्होंने अपना जीवन प्रापर्टी डीलर के कार्यालय में क्लर्क की नौकरी से आरम्भ किया था। प्रापर्टी डीलर और भी काम करता था जैसे मकानों को किराये पर उठाना, बीमा एजेंसी चलाना आदि। उसके यहाँ रंग का काम, मकानों तथा अन्य स्थानों के किराये वसूल करना, बीमें की किश्त लाना/टैक्स वसूली और अदायगी करना सरीखे काम भी होते थे। ये काम करने में लिए उन्हें बड़ी–बड़ी रकमों का लेन–देन करना पड़ता था और बड़े–बड़े प्रतिष्ठित व्यक्तियों से सम्पर्क करना पड़ता था। स्वभाव से बर्नार्ड साहब इतने विनम्र थे कि किसी के साथ सख्ती या जोर–जबरदस्ती नहीं कर पाते और लोग थे कि उनकी परवाह ही नहीं करते।



इन कारणों से वे अपने काम में अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर पा रहे थे। यद्यपि मालिक को उनसे कोई शिकायत नहीं थी, परन्तु स्वयं बर्नार्ड साहब को अपने काम से संतोष नहीं था। एक दिन उन्होंने अपना त्यागपत्र दे दिया कि वे काम नहीं कर पायेंगे। कारण यह है कि जितना वेतन मिलता है, मैं उतना काम नहीं कर पाता।

मालिक तो उनके काम से बहुत सन्तुष्ट थे। उन्होंने बर्नार्ड साहब को बहुत समझाया, परन्तु वह नहीं माने।

श्रम और ईमानदारी

एक बालक बहुत ही प्रतिभाशाली था, परन्तु उसके पिता ने उससे कभी काम नहीं लिया। उस बालक ने कभी कोई कार्य नहीं किया। जब उसके पिता की मृत्यु हो गयी, तब उसे खाने की समस्या हो गयी। वह काम की तलाश में जगह–जगह फिरने लगा। एक स्थान पर उसने एक होटल देखा। उसे बहुत ही भूख लगी थी, परन्तु वह बहुत ही स्वाभिमानी था। होटल का मालिक उसे देखता रहा कि वह बालक खाने की ओर निहार रहा है। उसने कहा कि क्या तुम भूखे हो? तब उस बालक ने कहा – 'हाँ'।

इस पर होटल के मालिक ने स्वयं उसे खाना परोस कर दिया, परन्तु उसने खाना खाने से इन्कार कर दिया। इस पर मालिक ने बहुत आग्रह किया, परन्तु उसने खाने से साफ मना कर दिया। उस बालक ने कहा कि मैं बिना कार्य किये व्यर्थ में भोजन नहीं ग्रहण सकता। इस बात पर होटल के मालिक ने उसे कार्य पर रख लिया और उसे होटल के बर्तनों की सफाई पर लगा दिया। (वह अपने श्रम के बल पर बाद में ख्याति प्राप्ति लेखक भी बना)

उसके कार्य से प्रसन्न होकर होटल के मालिक ने उसका वेतन बढ़ा देने को कहा, परन्तु उसने उसे लेने से इन्कार कर दिया। उसने कहा – "यदि सब कर्मचारियों का वेतन बढ़ाइये तो मेरा भी बढ़ा दीजिए।" इस पर मालिक बहुत प्रसन्न हुआ कि यह बालक किसी भी तरह से स्वार्थी नहीं है। अतः मालिक ने उसे अच्छे कार्य में लगा कर सभी के साथ उसका वेतन भी बढ़ा दिया।



बुद्ध की सीख

भगवान बुद्ध प्रायः नदी के किनारे व्याख्यान देते थे। उन्हें सब लोग बड़े ही ध्यान से सुनते थे। एक व्यक्ति उनका रोज व्याख्यान सुनता था, परन्तु उसमें कोई बदलाव नहीं आया। एक दिन उसने बुद्ध भगवान से पूछा कि मैं आपके व्याख्यान रोज सुनता हूँ, परन्तु मुझमे कोई बदलाव नहीं आता।

इस पर भगवान बुद्ध मुस्कुराये और उससे पूछा कि तुम किस गाँव से हो। उसने कहा कि यहाँ से दस कोस दूर एक पीपली गाँव है, मैं उसी में रहता हूँ। तुम अपने गाँव से कैसे आते हो। "मैं पैदल चल कर आता हूँ।" इस पर बुद्ध भगवान ने कहा कि यदि बिना चले तुम अपने गाँव पहुँच जाओ, तो मैं जानूं। इस पर उस व्यक्ति ने कहा कि यह तो सम्भव नहीं है।

इसी प्रकार मेरे वचनों को यदि तुम अपने व्यवहार में नहीं लाओगे तो तुम पर कोई असर नहीं होगा। इसके लिए तुम्हें स्वयं विभिन्न स्थितियों में निरन्तरता के साथ उन्हें प्रयोग में लाना होगा, तभी तुम अपने जीवन में परिवर्तन ला सकते हो।

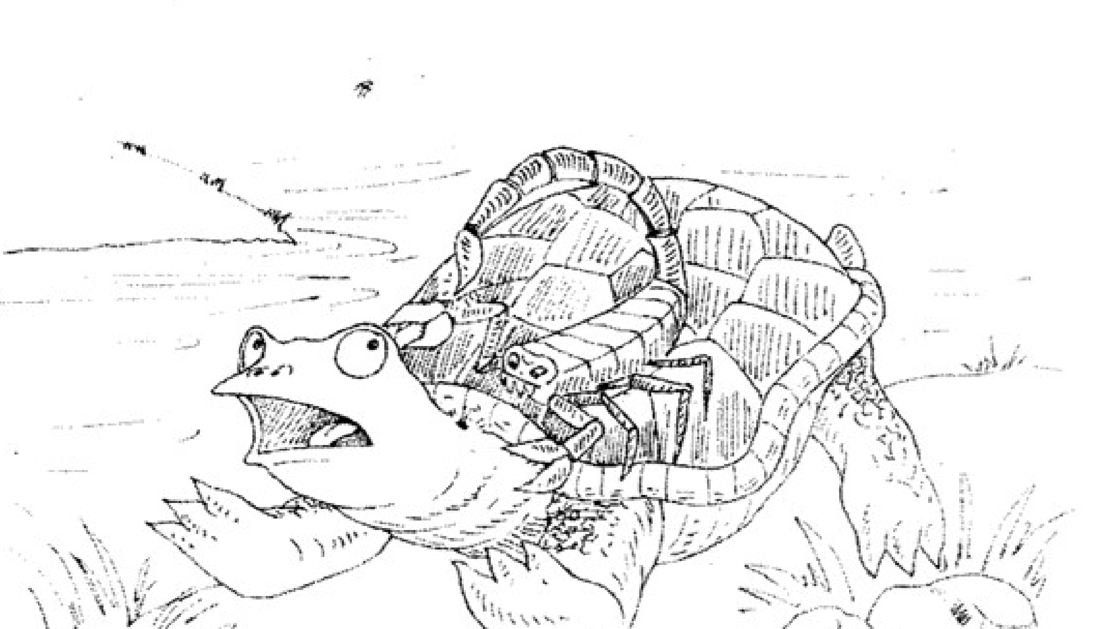


कछुआ एवं बिच्छू

नदी के किनारे रहने वाले एक कछुए एवं बिच्छू में अच्छी मित्रता थी। एक दिन नदी में बाढ़ आ गयी। कछुआ खुश था कि उसे तैरना आता है, किन्तु बिच्छू पानी के बहाव को देख कर विचलित हो गया। उसने कछुए से कहा कि मुझे नदी के उस पार अपनी पीठ पर बैठा कर ले चलो। मैं तुम्हारा बहुत उपकार मानूंगा। बिच्छू ने कहा कि मैं बहुत हल्का प्राणी हूँ और मुझे उस पार ले जाने में तुम्हें विशेष कष्ट नहीं होगा।

कछुआ बिच्छू की मीठी–मीठी बातों में आ गया और वह बिच्छू को नदी के पार ले जाने के लिए तैयार हो गया। बिच्छू ने किनारे पहुँच कर कछुए को धन्यवाद कहने के स्थान पर उसे डंक मार दिया। कछुआ बहुत दुःखी हुआ। उसने कहा मैंने तुम्हारे साथ अच्छा किया, परन्तु तुमने मेरे साथ अत्यन्त निन्दनीय कार्य किया।

स्पष्ट है कि बुरे लोगों का व्यवहार बदलना सम्भव नहीं है। बुरे लोग यदि थोड़ी देर के लिए अच्छे लोगों के सम्पर्क में आते भी हैं, तो भी उनका स्वभाव प्रायः नहीं बदलता।

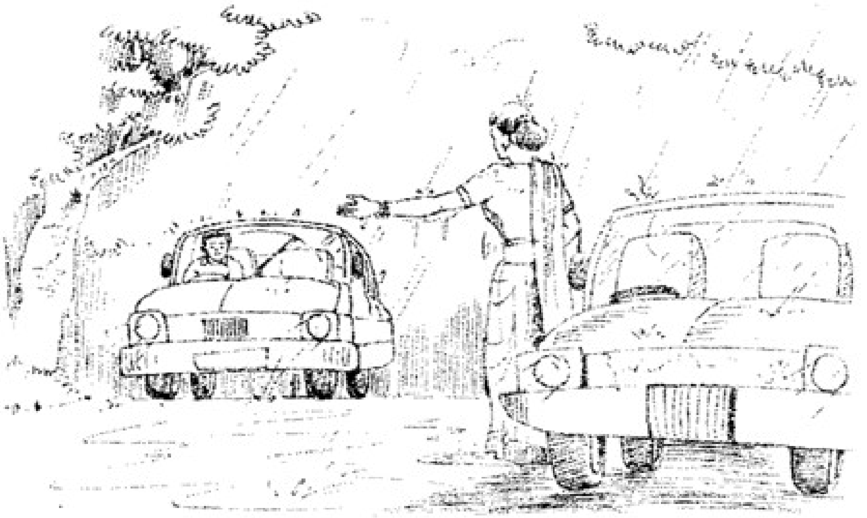


बरसात की एक रात

एक महिला रात में अकेले अपनी मोटर में जा रही थी। तभी भीषण पानी बरसने लगा तथा उसकी कार बन्द हो गयी। उसे घर पहुँचने की बहुत जल्दी थी। बरसात की रात डरावनी थी। दूर–दूर तक कोई बस्ती नहीं थी, न ही कोई पास में मोटर दिखाई दे रही थी। तभी उसे एक मोटर आती हुई दिखाई दी। उसने उसे हाथ देकर रोका व उसे किसी सुरक्षित जगह तक छोड़ने की विनती की।

दूसरी मोटर के चालक ने उसे अपनी कार में बैठाया तथा टैक्सी स्टैंड तक पहुँचा दिया। इसी बीच महिला ने उसका नाम व पता अपनी डायरी में नोट कर लिया। कुछ दिनों के बाद उस अजनबी वाहन चालक को एक पार्सल प्राप्त हुआ। महिला ने उसे धन्यवाद देते हुये लिखा कि उसकी सहायता के कारण वह अपने पति जो कि अपने जीवन के अंतिम समय में था, से मिल सकी। इसके लिये वह अजनवी को दिल से धन्यवाद दे रही है और ईश्वर से उसके लिये आशीर्वाद की कामना करती है। पार्सल में एक अच्छा सा कैमरा था।

जरूरत पर लोगों की सहायता करना हमारे जीवन का सर्वप्रथम ध्येय होना चाहिए। मदद हो जाने पर हमें अजनबी को भरपूर धन्यवाद देना भूलना नहीं चाहिये। अगर आप किसी भी सहायता करते हैं तो कोई अन्य भी आपकी सहायता जीवन में अवश्य करेगा।



चन्दन का वृक्ष

कुछ समय पूर्व एक राजा भ्रमण के लिये जंगल गया। वहाँ रास्ता भूल जाने और भूख–प्यास से पीड़ित होने पर एक वनवासी की झोपड़ी पर पहुंचा। वनवासी ने राजा की सेवा की। उसके आतिथ्य से राजा की जान बची। बाद में राजा ने बताया – "हम इस राज्य के शासक हैं।" राजा को बनवासी की सज्जनता इतनी अच्छी लगी कि उसने एक चन्दन का बाग बनवासी को प्रदान कर दिया। बनवासी को चन्दन के बाग की उपयोगिता पता नहीं थी। चन्दन का क्या महत्व है और उससे किस प्रकार लाभ उठाया जा सकता, इसकी जानकारी न होने पर बनवासी चन्दन के वृक्ष काट कर, उसका कोयला बना कर शहर में बेंचने लगा।

धीरे–धीरे सभी वृक्ष समाप्त हो गये। एक अंतिम वृक्ष बचा। वर्षा के कारण बनवासी कोयला न बना सका। अतः लकड़ी का गट्ठा लेकर बनवासी बाजार पहुँचा, तो लोग चन्दन की सुगन्ध से बहुत प्रभावित हुये। लोगों ने चन्दन की लकड़ी का अच्छा मूल्य दिया। आश्चर्यचकित बनवासी ने इसका कारण पूछा तो लोगों ने कहा – "यह बहुमूल्य चन्दन की लकड़ी है। अगर तुम्हारे पास ऐसी ही लकड़ी और हो, तो उसका प्रचुर मूल्य प्राप्त कर सकते हो।" तब बनवासी को अपनी नासमझी पर पश्चाताप होने लगा कि बहुमूल्य चन्दन के वृक्षों को कोयला बना कर बेंच दिया।



वर्षा एवं व्यक्ति

एक व्यक्ति अपने मालिक से छुट्टी लेकर अपने घर जा रहा था। उसने कच्चे रंग की चुनरी, कागज के खिलौने व बतासे आदि अपने घर के लोगों के लिए खरीदे। मार्ग में वर्षा आने से उसके पास की सारी वस्तुएं खराब हो गयी। वह व्यक्ति ईश्वर को कोसने लगा कि अभी ही वर्षा होनी थी। थोड़ी दूर आगे जाकर उसे कुछ डाकू झाड़ में बैठे हुये मिले, उन्होंने इस पर निशाना लगाया, पर कारतूस गीला होने के कारण गोली नहीं चली और किसी तरह से व्यक्ति ने अपनी जान बचायी। अब व्यक्ति पश्चाताप करने लगा तथा ईश्वर को धन्यवाद देने लगा।



महात्मा गांधी

एक बार महात्मा गांधी चरखा संघ के लिये लोगों से दान लेने हेतु निकले। उड़ीसा में एक जनसभा करके लोगों से भरपूर दान देने के लिये कहा। भाषण के बाद एक अत्यंत गरीब एवं बुजुर्ग महिला ने, जिसकी त्वचा ढीली, कपड़े फटे हुये, शरीर कमजोर, कमर झुकी हुई थी, महात्मा गांधी जी के पास जाकर दर्शन करने की लोगों से विनती की। लोगों ने उसे रोका, परन्तु किसी तरह उसने गांधी जी के चरणरज ले ली। बुजुर्ग महिला ने तांबे का सिक्का, जिसे उसने अपनी साड़ी के पल्लू में बांध रखा था, निकाल कर महात्मा जी के चरणों में रख दिया। महात्मा जी ने सिक्का बड़ी सावधानी से लेकर अपने पास रख लिया।

चरखा संघ में धन रखने का कार्य श्री जमन लाल बजाज करते थे। उन्होंने गांधी जी से सिक्के की मांग की, परन्तु गांधी जी ने उसे देने से इनकार किया। बजाज जी ने गांधी जी से कहा कि क्या आप मुझ पर विश्वास नहीं करते। इस पर गांधी जी ने कहा कि यह सिक्का मेरे लिए अत्यन्त मूल्यवान है क्योंकि यदि किसी व्यक्ति के पास हजारों रूपये हैं और उसमें से एक या दो हजार दे देता है तो उसके पास कुछ न कुछ बच जाता है, परन्तु इस स्त्री के पास तांबे का यह सिक्का ही एकमात्र पूँजी थी। वह भी उसने मुझे दे दिया, इसलिए यह करोड़ों रुपये से भी ज्यादा मूल्यवान है।



एक मार्मिक कथा

एक नौजवान कालेज से ग्रेजुएशन करके निकला। उसकी महीनों से एक अच्छी स्पोर्ट्स कार खरीदने की इच्छा थी और उसे ज्ञात था कि उसके पिता यह कार खरीदने में समर्थ हैं। उसने अपने पिता से स्पोर्ट्स कार खरीदने की इच्छा जाहिर की। जिस दिन उसे स्नातक की उपाधि मिलने वाली थी, तब उसके पिता जी ने एक नई बाइबिल उसे उपहार स्वरूप प्रदान की। इस पर नौजवान बहुत दुखी हुआ, घर छोड़ कर चला गया तथा अपना व्यापार प्रारम्भ कर दिया। धीरे–धीरे उसे जीवन के सभी भौतिक वस्तुयें जैसे, अच्छा घर व परिवार आदि प्राप्त हो गये।

बहुत वर्ष बीत जाने पर उसे अपने पिता की याद आयी। उसने सोचा कि पिता अब बहुत बुजुर्ग हो गये होंगे, चलो एक बार उनसे मिल आयें। तभी उसे टेलीग्राम प्राप्त हुआ कि उसके पिता स्वर्गवासी हो गये हैं तथा सारी सम्पत्ति उसके नाम कर गये हैं।



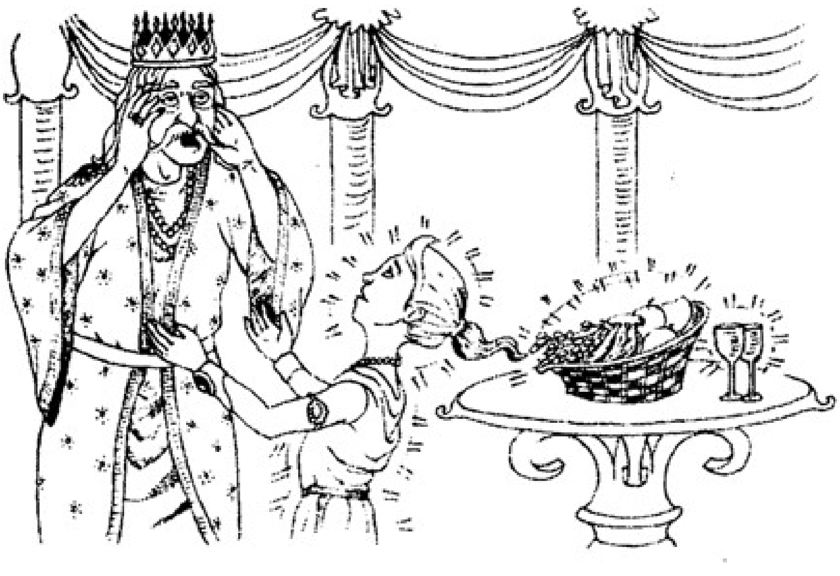
वह युवक तुरन्त अपने पुराने घर पहुँचा। जहाँ उसने पुराने कागज आदि देखने शुरू किये। उसमें उसे वहीं बाइबिल मिली, जिसे पिताजी ने पूर्व में दी थी। उसने दुखी मन से पढ़ना शुरू किया। उसे एक चाभी लिफाफे में रखी प्राप्त हुई। उसमें एक कागज चिपका था, कागज पर लिखा था – "कार के मूल्य का पूर्ण भुगतान कर दिया गया है।"

स्वर्ण की चाह

बहुत समय पहले मिडांस नाम का राजा था। उसे स्वर्ण की बहुत चाहत थी। उसके पास जरूरत से ज्यादा स्वर्ण था, परन्तु स्वर्ण के लिये उसकी इच्छा दिन–रात बढ़ती जा रही थी। एक दिन एक व्यक्ति जो कि उसके लिये अजनबी था, राजा के पास आया। उसने कहा – "हे राजा, मैं तुम्हारी एक इच्छा पूरी कर सकता हूँ।" राजा ने कहा – मैं चाहता हूँ कि जिस वस्तु को मैं छूऊँ, वह स्वर्ण हो जाये। उस अजनबी व्यक्ति ने कहा – "ऐसा ही होगा।"

अगले दिन से राजा जिस वस्तु को छूता, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जाती। राजा अन्दर ही अन्दर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपने सिंहासन पलंग, चादर, किताब को छुआ, वे सब स्वर्ण की हो गयीं। नाश्ते के समय उसका नाश्ता स्वर्ण का हो गया। उसी समय उसकी बेटी कहीं से खेल कर आयी। उसने उसे सीने से लगाया। सीने से लगाते ही बेटी स्वर्ण के बुत में परिवर्तित हो गयी। राजा बहुत दुखी हुआ। परेशानी की हालत में राजा उस अजनबी के पास गया। अजनबी ने पूछा – "क्या अब आप प्रसन्न है"? राजा का रो–रोकर बुरा हाल हो गया था। राजा ने कहा – "मैं तुम्हें अपना सारा स्वर्ण दे दूंगा, मुझे अपनी बेटी वापस चाहिये।"

अजनबी ने कहा – "हे राजा, अब तुम वास्तव में समझदार हो गये हो" और अजनबी ने राजा की इस शक्ति को समाप्त कर दिया। राजा को उसकी बेटी वापस मिल गयी।



स्वर्ग का अधिकारी

स्वर्ग में एक बार बहुत भीड़ इकट्ठी हुयी। उनसे धर्मराज ने कहा – "सब लोग एक प्रपत्र पर अपने जीवन में किए सभी अच्छे–बुरे कार्यो का विवरण लिखे, धर्म की कसौटी पर जिसके कार्य श्रेष्ठ समझे जाएगे, उन्हें ही यहाँ रखा जाएगा।"

जब परीक्षा पत्रों की जाँच की गयी, तो प्रायः सभी में कोई न कोई दोष निकला। किसी ने लिखा था कि मैंने जीवन भर तप किया है। कोई कह रहा था कि मैंने वेद शास्त्रों का अध्ययन कर लोगों को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश दिया है। किसी का कहना था कि मैंने आजीवन व्रत–उपवास किए है, परन्तु उन सबमें एक व्यक्ति ऐसा भी कहा था, जिसने परीक्षा पत्र की सभी प्रविष्टियां अधूरी छोड़ दी और लिखा– "मैं भूल से स्वर्ग में चला आया हूँ। मैं जाना तो नर्क में चाहता था, ताकि वहाँ के दीन–दुखियों की सेवा कर सकूँ।" यमराज ने केवल इसी व्यक्ति को स्वर्ग के योग्य माना।



'यह अच्छा है'

एक देश में राजा था, जिसका एक मित्र था। दोनों एक साथ रहते, घूमते तथा शिकार पर जाते थे। राजा का मित्र हर स्थिति में कहा करता था – "यह अच्छा है।"

एक दिन राजा अपने मित्र के साथ शिकार पर गया। रोज की भाँति उसके मित्र ने बन्दूक में गोली भर कर राजा को शिकार के लिये दी। राजा ने बन्दूक चलाई, परन्तु उसी समय राजा का अंगूठा बैकफायर के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो गया, राजा बहुत दुखी हुआ, परन्तु स्थिति को देखने के बाद राजा के मित्र ने कहा – "यह अच्छा है।"

राजा को अपने मित्र का वार्तालाप ठीक नहीं लगा और उसने तुरन्त मित्र को जेल भेज दिया। लगभग एक वर्ष के बाद राजा जंगल में शिकार के लिये पुनः गया, वहाँ उसे नरभक्षी लोगों ने पकड़ लिया। राजा के हाथ–पैर बांध कर आग जला कर गाना गाने लगे। अब राजा को लगा कि उसका अंतिम समय आ गया है। राजा ने नरभक्षी समुदाय से बहुत विनती की कि उसे छोड़ दिया जाये, परन्तु उसी समय राजा को उन लोगों ने पास से देखा कि उसके एक हाथ में अंगूठा नहीं है। नरभक्षी समुदाय अत्यन्त अन्धविश्वासी था। इस पर नरभक्षी समुदाय ने उसके हाथ–पैर खोल दिये और जाने के लिये कहा। महल लौट कर राजा ने तत्काल मित्र को रिहा कर दिया।



उसके मित्र ने कहा – "यह अच्छा है।"

राजा ने कहा – "यह तुम पुनः क्यों कह रहे हो कि यह अच्छा है"

मित्र ने कहा – "अगर मैं जेल में न होता तो मैं आपके पास होता, इस प्रकार नरभक्षी मुझे खा जाते। चूँकि मेरा कोई अंग कम नहीं है।

तीन ठग

मेरे एक मित्र स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में वरिष्ठ पद से सेवानिवृत्त हुये। उन्होंने जीवन में लाबीइगं के बारे में बताया कि इसके बिना जीवन में उन्नति करना आज के परिप्रेक्ष्य में आसान नही है।

उन्होंने एक दृष्टांत बताया। एक गांव में एक पंडित जी किसी जजमान के यहाँ से पूजापाठ करा के आ रहे थे। जजमान ने प्रसन्नतापूर्वक एक गाय दक्षिणा के रूप पंडित जी को प्रदान की। गाय लेकर खुशी–खुशी पंड्रित जी अपने घर जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक व्यक्ति मिला, जिसने पंडित जी से बातचीत के दौरान बताया कि यह गाय नहीं वरन् एक गधी है, जिसे आप गलती से गाय समझ रहे।

पंडित जी ने कहा – "मेरे जजमान ने मुझे गाय दक्षिणा में दी है, यह गधी नहीं है।"

थोड़ी दूर चलने पर पंडित जी को एक और व्यक्ति मिला। उसने भी पंडित जी से कहा, यह गाय नहीं गधी है। पंडित जी ने उसकी भी बात नहीं मानी। आगे जाकर पंडित जी को एक तीसरा व्यक्ति मिला। उसने भी पंडित जी को समझाया कि यह गाय नहीं है वरन् गधी है। भले ही यह भी दूध देती है और गाय के समान पूछ है।

अब पंडित जी को अपने साथ के जानवर पर शक हुआ कि अगर यह गधी है, तो घर तथा गांव वाले मेरा मजाक बनायेगे। गांव में बहुत बदनामी होगी, इससे अच्छा है कि इस जानवर को इस व्यक्ति को दे देना ही ठीक होगा। यह सोचते–सोचते अंत में पंडित जी ने साथ के जानवर अर्थात गाय को गधी समझ कर तीसरे व्यक्ति को दे दिया।



बुद्धिमानी का रहस्य

गांव में एक गरीब किसान रहता था। एक दिन राजा वहाँ से गुजर रहा था। उसने किसान को बुलाया और उससे पूछा तुम कितने पैसे कमा लेते हो और उन्हें कैसे खर्च करते हो? किसान ने कहा – "महाराजा, मैं रोज एक रुपया कमाता हूँ। पहले एक चौथायी भाग खाता हूँ, दूसरे को उधार देता हूँ, तीसरे को वापस दे देता हूँ, चौथे को फेंक देता हूँ। क्या तुम इसे समझा सकते हो"? राजा ने पूछा। महाराज पहले चौथाई भाग को मैं अपने भोजन के लिए खर्च करता हूँ, दूसरे को बच्चों पर खर्च करता हूँ, तीसरे को अपने माता–पिता पर खर्च करता हूँ एवं चौथे भाग को गरीबों में बांट देता हूँ।

किसान का जवाब सुन कर राजा ने कहा – 'जब तुम मेरे चेहरे को सौ बार देख लो, तब तक इस पहेली का जवाब बताना नहीं।'

अगले दिन राजा ने वही पहेली अपने मंत्रियों से पूछी। सब चुप रहे। राजा ने उन्हें एक दिन का समय दिया। एक मंत्री को पता चला कि कुछ दिन पहले राजा किसी किसान से मिले थे। वह जवाब के लिए गांव को चल दिया। किसान ने जवाब देने से इनकार कर दिया। मंत्री ने सौ मुद्रायें निकाल कर किसान को दी। मुद्राओं के ऊपर राजा का चेहरा बना हुआ था। किसान की मदद से मंत्री ने पहेली का जवाब जान लिया।

यह जानकर राजा बहुत क्रोधित हुआ। वह किसान के पास पहुँचा। तुमने ऐसा क्यों किया? आप के कथनानुसार जवाब देने से पहले मैंने आपका चेहरा सौ बार देखा। तुमने मेरा चेहरा सौ बार कैसे देखा? महाराज, इन मुद्राओं पर आपका चेहरा बना था। राजा किसान की बात सुन कर अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसे अनेक उपहार दिये।



जंगल की आग

एक बार एक जंगल में आग लग गयी। सभी आग बुझाने में जुट गए। जिसके हाथ में जो पात्र आया, उसमें पानी भर कर आग में डालने लगा। सभी को आग बुझाने में जुटा देख, एक नन्हीं गौरैया भी अपनी चोंच में पानी भर--भर आग में डालने लगी।

एक कौआ दूर एक सुरक्षित डाल पर बैठा तमाशा देख रहा था। वह गौरैया के पास आकर बोला – ''नन्हीं गौरैया, क्या तुम समझती हो कि तुम्हारी नन्हीं चोंच का बूंद भर पानी इस भयंकर आग को बुझाने में कोई सहायता कर पायेगा।''

गौरैया ने जवाब दिया –– यह तो मैं जानती हूँ, परन्तु यदि कभी इस आग के बारे में बातें होगी, तो मेरा नाम आग लगाने वालों अथवा तमाशा देखने वालों में नहीं, बल्कि आग बुझाने वालों में लिया जायेगा। इस बात पर कौए को अपनी कही बात पर शर्मिंदगी हुयी।



जंगल में धुंआ

समुद्र में एक बहुत बड़े जहाज के डूब जाने पर एक यात्री बच गया तथा अनजाने और मनुष्यविहीन टापू पर आ लगा। उसने ईश्वर की बहुत प्रार्थना की कि ईश्वर उसे बचा ले व उसे घर पहुंचा दे। दिन–रात वह टापू पर भटकता रहा। बार–बार वह समुद्र के विशाल जल की तरफ आशा से नजर दौड़ाता कि शायद कोई आकर उसे जीवनदान दे दे।

थक कर उसने टापू पर एक छोटी से मकाननुमा कुटिया बनाई, जहाँ उसे रहने का सहारा प्राप्त हो सके। एक दिन जब वह टापू पर भोजन की खोज में था, तभी अचानक उसकी कुटिया में आग लग गयी। वह जल कर राख हो गयी और धुंए से आसमान ढक गया। उसे बहुत दुःख हुआ और उसने ईश्वर से मन ही मन कहा –– "यह आप कैसे कर सकते हैं?"

तभी उसे एक जहाज अपनी तरफ आता दिखा। नाविकों ने उसे ढूंढ़ निकाला। उस व्यक्ति ने नविकों से पूछा –– "आपको मेरे बारे में कैसे पता लगा?"

नाविकों ने कहा कि टापू पर आग व धुंआ देख कर उन्हें संशय हुआ कि शायद कोई व्यक्ति यहां पर हो, जिसे हमारी सहायता की आवश्यकता हो।" यात्री ने पुनः ईश्वर को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया।



चार रानियाँ

एक राजा के चार रानियां थीं। वह अपनी चौथी रानी को सबसे ज्यादा प्यार करता था। उसे कीमती से कीमती वस्त्र, आभूषण और भोज्य पदार्थ लाकर देता था। तीसरी रानी पर राजा को बहुत–अभिमान था, उसे अपने मित्रों से मिलवाता था। वह इतनी सुन्दर थी कि उसे हर समय डर लगा रहता था कि कहीं वह किसी के साथ चली न जाये। राजा को अपनी दूसरी रानी पर बहुत विश्वास था तथा जरूरत के समय उससे सलाह भी लेता था। राजा की पहली रानी बहुत सीधी, सरल, कामकाजी व राजा के कार्यों में पूरे मनोयोग से सहयोग देती थी। राजा को बहुत प्यार करती थी, परन्तु राजा को पहली रानी अच्छी नहीं लगती थी।

एक दिना राजा बीमार पड़ गया और उसके बचने की उम्मीद कम हो गयी। तब राजा ने अपनी चौथी रानी को अपने पास बुलाया और कहा, "अब मेरा अन्तिम समय आ गया है क्या तुम मेरा साथ दोगी।" चौथी रानी ने मना करते हुए राजा से कहा – "तुम्हारे जाने के बाद मैं दूसरा विवाह करके सुखमय जीवन बिताऊंगी।" यह सुन कर राजा को बहुत दुख हुआ।

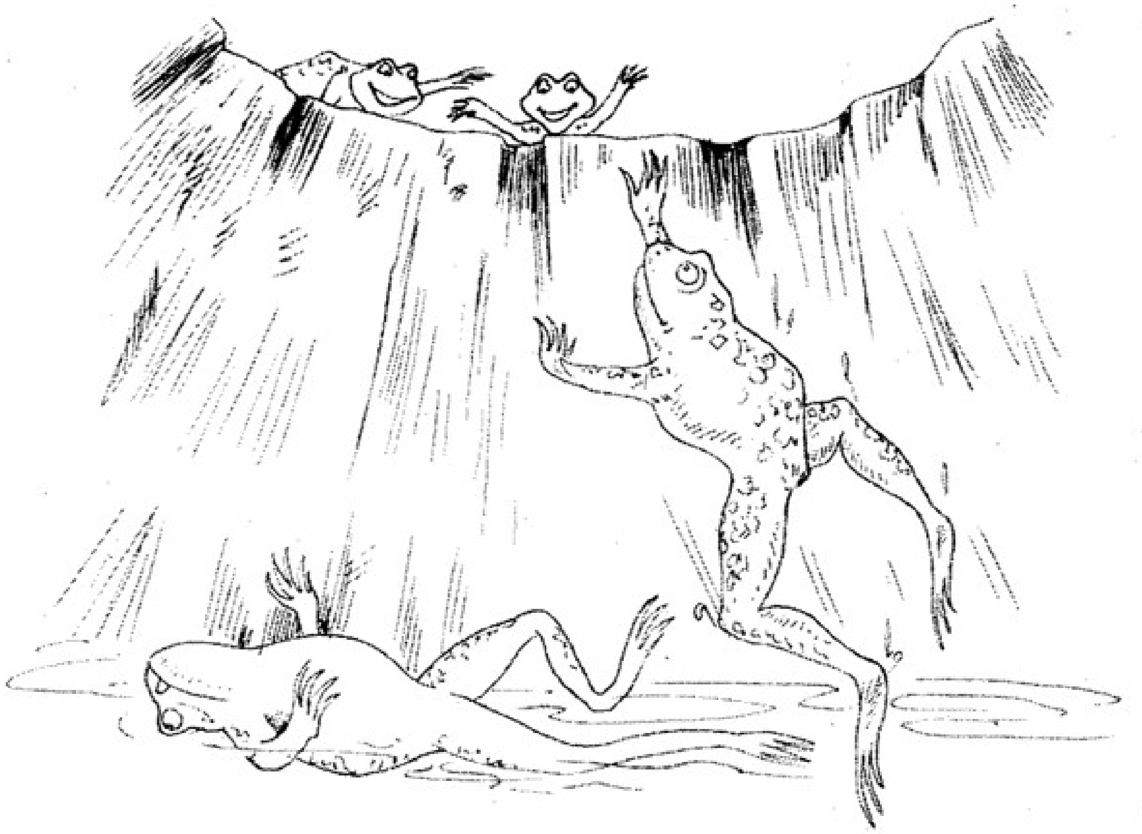
राजा ने अपनी तीसरी रानी को बुलाया और कहा कि क्या तुम मेरा अंतिम समय में साथ दोगी। तीसरी रानी ने कहा – "मैं तुम्हारा साथ कब्र तक पहुंचाने तक ही दूंगीं।"

तब राजा ने अपनी दूसरी रानी को बुलाया। उसने भी साथ जाने के लिए असहमति दिखा दी। तभी उसकी पहली रानी ने आकर कहा – "राजा मैं तुम्हारे साथ हूँ।" तब राजा को अफसोस हुआ कि पहली रानी की उसने थोड़ी भी देखभाल नहीं की, इसके बावजूद पहली रानी अंतिम समय में भी उसके साथ है।



दो मेढ़कों की कथा

एक जंगल में दो मेंढ़क साथ–साथ जा रहे थे। तभी दोनों मेंढ़क एक कुएं में गिर गये। जंगल के अन्य मेढ़कों ने समझा कि शायद यह दोनों खत्म हो गये है। उन्होंने कुएं के दोनो मेंढ़कों से कहा कि अब तुम यह जान लो कि तुम दोनों मर गये हो। दोनों मेढ़कों ने अपनी जान बचाने के लिये ऊँची–ऊँची छंलाग लगाने की कोशिश जारी रखी। पहले मेढ़क ने यह समझ लिया कि अब वह मरने के समान है और अंत में उसकी मौत हो गयी। दूसरे मेढ़क ने छलांगे लगानी जारी रखी, जब कि कुएं के बाहर के मेढ़क उसे मरने के बारे में बार–बार बता रहे थे। अंत में दूसरे मेढ़क को कुएं से बाहर आने में सफलता प्राप्त हो गयी। बाहर के मेढ़कों ने उससे पूछा कि क्या तुमने हमारी बात नहीं सुनी थी? दूसरे मेढ़क ने कहा – "मुझे सुनाई नहीं देता है। मेरी समझ में आप सब मुझे बाहर आने के लिये प्रेरित कर रहे थे।



बालू और पत्थर

रेगिस्तान में दो मित्र एक साथ जा रहे थे। तभी दोनों में किसी बात को लेकर मतभेद हो गया, इस पर एक मित्र ने दूसरे मित्र को चांटा मार दिया। थप्पड़ खाकर मित्र बहुत दुखी हुआ, परन्तु उसने अपने मित्र से कुछ नहीं कहा और अपने हाथ से बालू में यह लिख दिया – "आज मेरे मित्र ने मेरे मुंह पर थप्पड़ मारा है।"

इसके बाद भी दोनों मित्र साथ–साथ घूमते हुये एक ऐसी जगह पर पहुंचे, जहां पानी का सोता था। दोनों ने नहाना शुरू कर दिया। उसी समय मित्र जो पहले थप्पड़ खा चुका था, दलदल में फंस कर डूबने लगा। उसे मारने वाले मित्र ने कोशिश करके डूबने से बचा लिया। जब डूबने वाले मित्र को होश आया, तब उसने पत्थर पर यह लिखा – "आज मेरे मित्र ने मेरी जान बचायी है।"

जान बचाने वाले मित्र ने पूछा – "जब मैंने थप्पड़ मारा था, तब उसे बालू पर लिखा, परन्तु जान बचाने की बात आपने पत्थर पर लिखी।"

उसके मित्र ने कहा – जब हमें कोई हानि पहुंचाता है, तब उस बात को बालू पर लिखना चाहिये, जहां क्षमा रूपी तेज हवायें (आयी) उस बात को मिटा देती है। परन्तु अगर कोई आपके साथ अच्छा कर्म करता है, तब उसे पत्थर पर अंकित कर देनी चाहिये ताकि तेज हवायें उसे मिटा न सकें।



व्यक्तित्व से जुड़ी यादें

लगभग एक शताब्दी पूर्व एक व्यक्ति ने अखबार में अपना नाम मृतकों की सूचना में लिखा हुआ देखा। इस पर उसे अत्यंत डर व आश्चर्य हुआ। अखबार ने गलती से उस व्यक्ति को मृतक घोषित कर दिया था। उसने सोचा कि मैं जिन्दा हूं या मृतक। उसने खबर को फिर से यह जानने के लिये पढ़ा कि लोग उसे मरने के बाद किस नाम से याद करेंगे? निधन सूचना में लिखा था कि डाइनामाइट बनाने वाले वैज्ञानिक की मौत हो गयी है तथा उसे 'मौत का सौदागर' बताया गया। उसके मन में एक विचार 'मौत के सौदागर' से प्रेरित होकर आया – "क्या इसी भांति उसे भविष्य में याद किया जायेगा?"

इस बिन्दु पर पुनः विचार किया कि उसे लोग इस तरह से याद न रखे, तभी से उसने शांति के लिये कार्य करना प्रारम्भ किया। इस सज्जन व्यक्ति का नाम अल्फर्ड नोबल था। महान नोबल पुरस्कार की शृंखला अल्फर्ड नोबल की स्मृति में प्रारम्भ की गयी।



छोटी नहीं, छोटी बातें

समुद्र के किनारे एक व्यक्ति टहल रहा था। उसने देखा कि हजारों मछलियां समुद्री लहरों के कारण किनारे पर आकर तड़प रही हैं। धूप भी प्रारम्भ हो गयी थी। उससे यह दृश्य देखा नहीं गया। अतः उसने पास में पड़ी एक–एक कर छटपटाती हुई मछलियों को उठा कर समुद्र के पानी में डालना शुरू किया।

कुछ देर बार एक अन्य व्यक्ति ने जो कि यह दृश्य बहुत देर से देख रहा था, उससे जानना चाहा – "तुम यह क्या कर रहे हो?" इससे तुम्हें क्या अन्तर पड़ता है? यहां तो हजारों छोटी–छोटी मछलियां हैं। तुम कितनी मछलियों की सहायता कर सकोगे? पहले व्यक्ति ने कोई जवाब नहीं दिया और दो कदम बढ़ कर फिर एक और मछली को उठा कर समुद्र में डाल दिया और कहा, केवल इस मछली को इसका अन्तर पता लग सकेगा।"



गलती से सीख लेना

अमरीका का एक प्रांत है – न्यूजर्सी। इसी के शहर एडीसन में एक वैज्ञानिक थामस एडीसन द्वारा नये–नये शोध किये गये। शोध करने के लिये एक बहुत विशाल प्रयोगशाला बनायी गयी, जहां पर देश–विदेश के वैज्ञानिकों द्वारा नये–नये प्रयोग किये गये। थामस एडीसन स्वयं कोई वैज्ञानिक नहीं थे, परन्तु वे शीर्ष स्तर के वैज्ञानिकों को विज्ञान के क्षेत्र में प्रयोग करने के लिये निरंतर प्रेरित करते थे तथा आर्थिक रूप से सहायता भी देते थे। उन्हीं नाम से एडीसन शहर बसा, जहां उनके कार्य क्षेत्र को म्यूजियम बना दिया गया है। यहां पर प्रतिदिन हजारों लोग म्यूजियम में भ्रमण करते हैं और शोध के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

एक बार उनसे किसी ने जानना चाहा कि बिजली के बल्ब में लगने वाला फिलामेंट की खोज में लगभग दो हजार सामग्री का विश्लेषण किया गया। उसके बाद भी सफलता नहीं मिली थी, आपको कैसा लगता है?"

थामस एडीसन ने पूर्ण विश्वास से कहा, हमने काफी लम्बी लड़ाई लड़ी है तथा बहुत कुछ सीखा है। जैसे दो हजार तरह की सामग्री से बल्ब का फिलामेंट नहीं बन सकता। यह जानकारी भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। बाद में एडीसन की प्रयोगशाला में बिजली का बल्ब, बिजली की घंटी, ग्रामोफोन का रिकार्ड आदि भौतिक वस्तुओं का अविष्कार किया गया। यह सारे आविष्कार थामस एडीसन की सकारात्मक सोच के कारण सम्भव हुए।



राजा व कालीन

पुरातनकाल में एक राजा था, जिसने जूता कभी नहीं पहना था। इस कारण उसके पैरों में बहुत कष्ट रहता था। एक दिन वह अपने पैरों के तकलीफ की वजह से बहुत दुःखी हो गया। उसने अपने होनहार मंत्री को आदेश दिया – "मेरे पूरे राज्य में हर जगह कल तक कालीन बिछवा दो अन्यथा तुम्हें सजा दी जायेगी।" पूरी रात वह बिचारा मंत्री इस समस्या का हल निकालने में लगा रहा, पर उसे कोई सफलता नहीं मिली। जैसे ही सूर्योदय हुआ, उसके मन में एक विचार आया और वह शाही कालीन स्टोर की तरफ भाग कर गया।

राजा सुबह उठ कर खिड़की के पास गया और अपने राज्य में बिछे हुये कालीन को देखना चाहा, परन्तु उसे कालीन नहीं दिखी। राजा को बहुत गुस्सा आया और उसने अपने मंत्री को सजा के लिए तलब किया। उसी समय वह मंत्री एक जोड़ी विदेशी जूता लेकर राजा के दरबार में उपस्थिति हुआ और राजा से कहा – "हे राजा! मुझे सजा मत दीजिये। यह विश्व की पहली कालीन जूती है, कृपया इसे पहन कर देखिये।"

राजा ने कालीन से बनी जूती (नागरा) पहनी। वह अत्यंत मुलायम कालीन से बनाई गयी थी, जिसे पहन कर राजा बहुत प्रसन्न हुआ।



प्यार भरा डब्बा

एक छोटी सी लड़की को अपने पिता से बहुत प्यार था। क्रिसमस के दिन उसने एक छोटा सा उपहार से भरा डिब्बा बनाया तथा उसको एक अति सुन्दर गोल्डन कागज से पैक कर दिया। अगले दिन प्रातः उसने उपहार का डिब्बा अपने पिता जी को दिया। उसके पिता उपहार पाकर बहुत प्रसन्न हुए। पिता ने डिब्बे को खोलने पर उसे खाली पाया। इस पर उसके पिता जी बहुत नाराज हुए और कहा उपहार के डिब्बे को किसी को भी खाली डिब्बा नहीं देना चाहिए। उसमें उपहार होना जरूरी है।

लड़की आँखों में आँसू आ गये और रोते हुए उसने अपने पापा से कहा – "पापा यह खाली नहीं है। इसमें मेरा बहुत सारा प्यार व आदर आप के लिए है।" यह सुन कर पापा शर्मिन्दा हो गये और अपनी लड़की से माफी माँगी।

कुछ दिनों बाद संयोगवश उस लड़की की मृत्यु एक दुर्घटना में हो गयी। उसके पिता ने वही डिब्बा उसके पलंग के पास बहुत समय तक रखा। जब कभी पापा को कष्ट होता तो वह उस डिब्बे को खोल कर अपनी लड़की द्वारा रखो गये काल्पनिक प्यार व आदर को अतर्मन में महसूस करते। इस प्रकार उनके अतःकरण को शांति प्राप्त होती।



पहाड़ की आवाज

एक पहाड़ पर एक पिता और पुत्र सैर कर रहे थे। उसी समय बेटे का पैर फिसल गया, उसे चोट लग गयी और बच्चा जोर से चिल्लाया। पहाड़ से भी एक चिल्लाने का आवाज दोबारा आयी, इस पर उसने पहाड़ से पूछा – "तुम कौन हो?" पहाड़ की तरफ से तुरन्त आवाज आयी, 'तुम कौन हो?' उसने फिर पहाड़ की तरफ मुंह करके कहा – "मै तुम्हें चाहता हूँ।" पुनः पहाड़ की तरफ से आवाज आयी, 'मैं तुम्हें चाहता हूँ।' दोबारा पहाड़ की तरफ मुँह करके बेटा जोर से चिल्लाया – "डरपोक"। पहाड़ की तरफ से उत्तर आया – "डरपोक"।

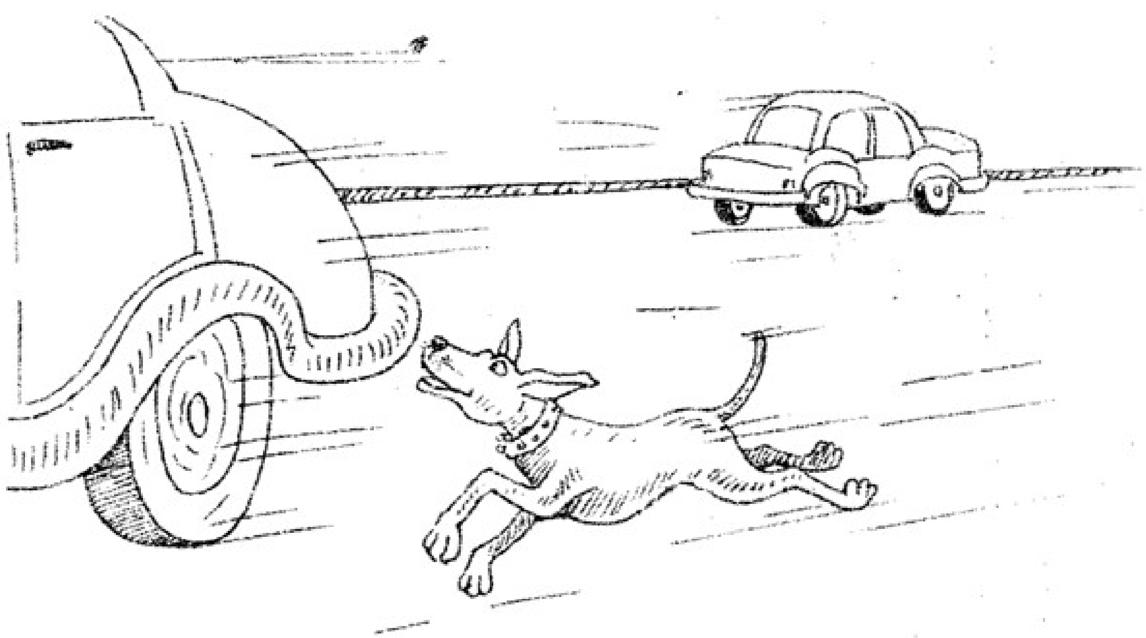
लड़के को आश्चर्य के साथ कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उसने पिता से जानना चाहा कि यह क्या हो रहा है? अब पिता ने चीख कर कहा – "विजेता"। पुनः पहाड़ की तरफ से जवाब आया – "विजेता"। बच्चे का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था। तब उसके पिता ने कहा – "यह प्रतिध्वनि है अर्थात गूंज (दोहराना)। वास्तव में यही जीवन है।"



अर्थहीन लक्ष्य

एक शहर में एक कुत्ता सड़क के पास बैठा रहता था। उसे अपने मालिक से बहुत प्रेम था। अक्सर सड़क पर आते–जाते वाहनों के पीछे भौंकने के साथ दौड़ कर पकड़ने की कोशिश करता था। यह कार्य कुत्ते द्वारा रोज किया जाता था। एक दिन कुत्ते के मालिक से उसके पड़ोसी ने पूछा – "क्या कभी कुत्ता वाहन को पकड़ पायेगा?"

मालिक ने कहा – "यह बात मुझे परेशान नहीं करती है वरन् मैं यह सोचता हूँ कि कुत्ते ने अगर कभी वाहन को पकड़ लिया तो उसका वह करेगा क्या?"



श्रीराम एवं केवट

वनवास के समय श्रीराम अपने परिवारजनों के साथ जंगलों से होकर एक नदी के घाट पर पहुंचे, जहां उनका एक अत्यंत पुराना भक्त, केवट नाव के साथ इंतजार कर रहा था। उसे इतनी श्री राम के प्रति भक्ति व अराधना थी कि उसे पुर्वानुमान था कि अब उसके ईष्ट यहां पधारने वाले हैं। श्री राम के वहां पहुंचते ही केवट ने अपनी सेवायें उन्हें अर्पित की। श्री राम ने कहा – "हे केवट, क्या तुम हमें नदी के पार ले चलोगे?" केवट ने कहा – "हाँ ईष्ट देव, परन्तु मेरी एक शर्त है। नाव में विराजने से पहले आपके चरण धोकर साफ करूंगा, तत्पश्चात आप मेरी नाव में सवार होंगे।"

श्रीराम ने पूछा – "इसकी क्या आवश्यकता है?" केवट ने कहा, हे राम, आपके चरणों के स्पर्श मात्र से पत्थर स्त्री बन जाता है। अगर मेरी नाव आपके चरणों के स्पर्श करने मात्र से स्त्री बन गयी तो मेरा व्यवसाय समाप्त हो जायेगा और हम अपने परिवार का पालन पोषण कैसे करेंगे?" श्री राम मुस्कराये और केवट को चरणों के धोने की अनुमति दे दी।

थोड़ी देर में नाव द्वारा श्रीराम अपने परिवार के साथ नदी के उस पार पहुंच गये। पार आकर श्री राम ने केवट से अनुरोध किया – "कृपया यहां पहुंचाने का अपना पारिश्रमिक हमसे ले लें फिर सीता जी से कहा – हमारे पास धन तो है नहीं। अतः आप अपनी अंगूठी केवट को पारिश्रमिक के तौर पर दे दें। केवट ने बहुत विनीत होकर लेने से मना कर दिया।

केवट ने कहा – "हे राम, आप भवसागर के केवट हैं। आप ही सब को भवसागर से पार कराते हैं। बस मेरी एक छोटी सी आपसे प्रार्थना है। जब मेरा भवसागर पार करने का समय आये, तब आप अपनी असीम अनुकम्पा से हमें पार करा दीजिएगा।

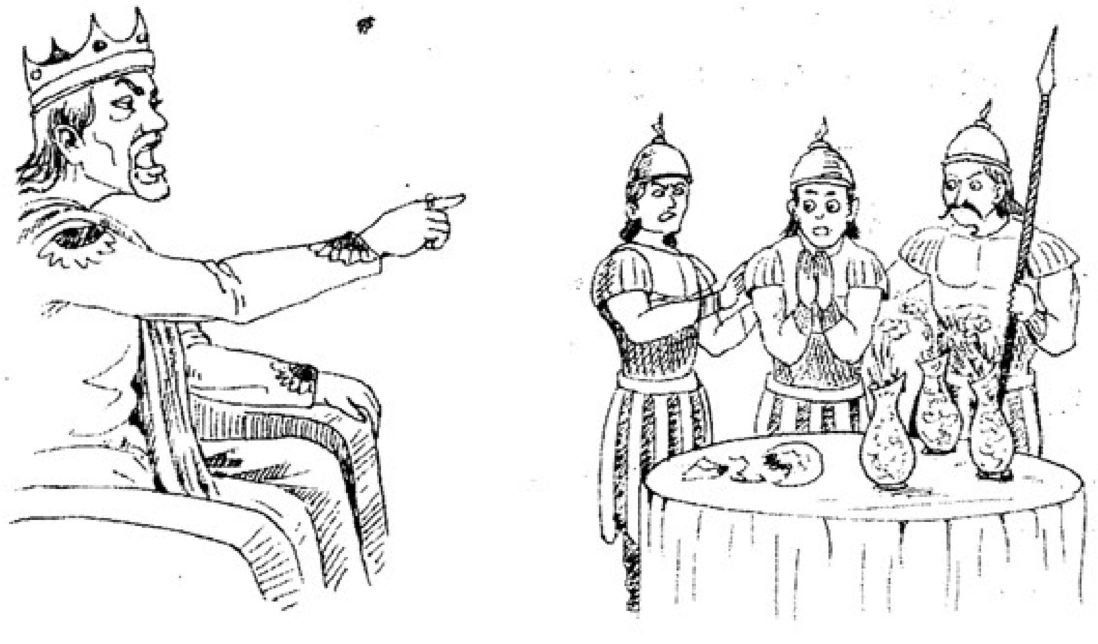


फांसी की सजा

एक राज्य में वार्षिक उत्सव बहुत धूमधाम से मनाता था। राजा को अनेक बहुमूल्य उपहार प्राप्त हुए, जिसमें अनोखे व अद्‌भुत चार सतरंगी फूलदान थे। चारों फूलदान राजा को अत्यन्त प्रिय थे। राजा ने फूलदान अपने महल में रखा लिये। वह प्रत्येक दिन दरबार लगाते थे। राजा ने फूलदान के चारों तरफ पहरा लगा दिया और कहा कि अगर किसी से कोई फूलदान टूटा तो उसे मृत्युदंड दिया जायेगा।

कुछ वर्षो के बाद राजा के सेवक के हाथ से एक फूलदान टूट गया। राजा बहुत क्रोधित हुआ और उसने कहा कि इस सेवक को तुरन्त फांसी पर चढ़ा दिया जाये। उस सेवक ने राजा से बहुत विनती की कि उसे माफ कर दें, परन्तु राजा ने सेवक की विनती नहीं मानी। फांसी लगने से पहले उसने राजा से एक विनती एवं प्रार्थना की कि उसे राज्य के सबसे अधिक बुद्धिमान व्यक्ति को मिलने दिया जाये। सेवक ने अपनी सारी समस्याएं उसे बतायी। बुद्धिमान व्यक्ति ने सेवक को कुछ कान में बता दिया।

फांसी के समय राजा ने उसे अपनी अंतिम इच्छा बताने को कहा। राजा ने हामी भर दी। सेवक ने कहा कि मरने से पहले मैं तीन बचे हुए फूलदान एक बार हाथ में लेकर देखना चाहता हूँ। राजा ने तीनों फूलदान



उसके हाथ में रख दिये। सेवक ने तुरन्त तीनों फूलदानों को जमीन पर पटक दिया और वे सब चूर–चूर हो गये। राजा पुनः बहुत क्रोधित हुआ और बोला कि तुम्हें इन कीमती फूलदानों को तोड़ कर क्या मिला? सेवक ने कहा – "तीन बेकसूर लोगों को जीवनदान। इन फूलदानों के कारण तीन और लोगों को मेरी तरह फांसी पर चढ़ना पड़ता।"

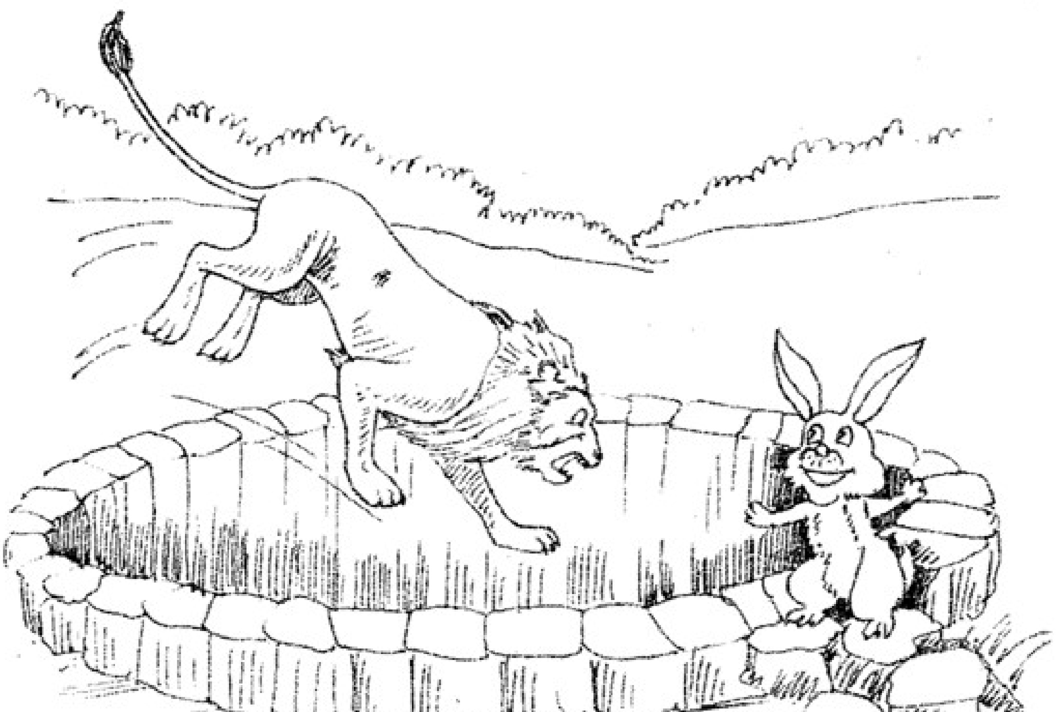
राज बहुत खुश हुआ। उसने फांसी का आदेश वापस ले लिया और सेवक से पूछा कि तुम्हें ऐसा करने की राय किसने दी थी। सेवक ने राजा के उस बुद्धिमान की ओर इशारा कर दिया।

राजा व्यक्ति की बात से बहुत प्रसन्न हुआ। उसे धन्यवाद दियां और कहा – "तुमने एक सेवक की जान बचाने में विवेक का काम किया।

जंगल के राजा की कहानी

यह एक बहुत पुरानी कथा है, जिसे हम बचपन से सुनते आ रहे हैं। एक जंगल में शेर रहता था। उसका अन्य जानवरों पर बहुत आतंक था, जिसके कारण वह अपने को जंगल का राजा बताता था। रोज शेर द्वारा कई जानवर प्रताड़ित किये जाते थे। इस पर जंगल के सभी जानवरों ने एक मीटिंग की और निर्णय लिया कि एक जानवर प्रतिदिन उसके खाने के लिये भेजा जायेगा, जिससे वह सारे जानवरों को परेशान न करे। इस पर जंगल का राजा शेर बहुत प्रसन्न हुआ कि अब उसे शिकार के लिये जंगल में भटकना नहीं पड़ेगा।

कुछ दिनों के बाद एक छोटे से खरगोश की बारी शेर का भोजन बनने की आयी। खरगोश शेर के मुकाबले बहुत चतुर व बुद्धिमान था। उसने शेर के पास जाकर बहुत शालीनता से बताया कि हम पांच खरगोश आपके पास आपके भोजन के लिये आ रहे थे, तभी रास्ते में एक दूसरे शेर



ने हमें रोक लिया और कहा – "हम तुम सबको आज ही खायेंगे। हम इस जंगल के राजा हैं।" हमने बहुत कोशिश की कि वह समझ जाये कि इस जंगल के राजा आप हैं। इस पर दूसरे शेर ने चिल्ला कर कहा – तुम में से एक जाकर उस शेर को पकड़ कर मेरे पास ले आओ और बाकी सारे खरगोश मेरे कब्जे में रहेंगे।

यह सुन कर पहला शेर बहुत क्रोधित हुआ और कहा – "मैं तुम्हारे साथ अभी चलता हूँ उस शेर से मिलने के लिये।" खरगोश के साथ जंगल का राजा कुएँ के पास पहुँचा। शेर ने कहा – "वह खूसट शेर दिख नहीं रहा, कहाँ है? खरगोश ने कहा – "महाराज, दूसरा शेर आपसे डर कर इस कुएं में छिप गया है।" शेर ने कुएं में झांका तो उसे अपने छाया पानी की सतह पर दिखी। वह जोर से दहाड़ा तो कुएं से भी दहाड़ की आवाज आयी। उसके बाद शेर कुएं में छिपे शेर को मारने के लिए उसमें कूद गया और इस तरह एक छोटे से खरगोश ने जंगल के राजा शेर को मात दे दी।

दंड के स्थान पर क्षमा

महाराजा रणजीत सिंह एक विख्यात शासक थे। साथ ही वह बहुत साहसिक योद्धा भी थे, परन्तु उन्हें अपने योद्धा होने और अजेय सम्राट बनने का गर्व छू तक नहीं पाया था। एक बार वे अपनी सेना सहित युद्ध के लिए जा रहे थे। महाराज जब अपने बाग की तरफ से जा रहे थे तो उसी समय एक पत्थर आकर उनके सिर पर लग गया।

सिपाहियों ने देखा तो वे तुरन्त दीवार फांद कर बाग के भीतर गये और देखा कि कुछ बच्चें एक पेड़ पर जो कि आमों से लदा था, पत्थर फेंक रहे हैं। आम टूट कर गिर रहे हैं। बार–बार पत्थर पेड़ पर मार रहे थे। उसी में से एक पत्थर महाराज को भी लग गया था। सिपाही उन बच्चों को पकड़ कर महाराज के पास लाये। बच्चे बहुत ही डरे हुए थे कि अब महाराज हमें सजा देंगे, परन्तु महाराज ने उन्हें कुछ भी नहीं कहा और क्षमा दे दी।

महाराज सोचने लगे कि मैं इन्हें क्या सजा दूँ, जब ये पेड़ को पत्थर मार रहे हैं। पेड़ इन्हें आम दे रहा है तो मैं तो इन्हें कुछ भी नहीं दे सकता, केवल क्षमा ही कर सकता हूँ। इस प्रकार महाराजा रणजीत सिंह अपने उदार भाव के साथ जाने जाते हैं।



कंजूस की कथा

रामदास बहुत धनी व्यक्ति था, परन्तु बहुत कंजूस था। प्रत्येक समय वह सोचता था कि किस प्रकार पैसे को बचाया जाये, इसीलिए उसने विवाह नहीं किया। उसने सोचा कि विवाह करुँगा तो बच्चे पैदा होंगे और वे बच्चे मेरी दौलत का आनन्द उठायेंगे। वैसे वह करोड़पति था, परन्तु फटे--पुराने कपड़े पहनता था और केवल पेट भरने के लिए सादा सा भोजन करता था।

उसके पड़ोस में ही एक विश्वविद्यालय था। उसे बढ़ाने के लिए एक विभाग और खोलना था। उसके लिए धन की आवश्यकता थी। कुछ लोगों ने सोचा कि हम चन्दा इकट्ठा कर रहे हैं, चलो इस करोड़पति के पास भी चन्दा मांगने के लिए चलते हैं। वे उसके पास चन्दा मांगने के लिए चल दिये। जब उस करोड़पति के पास पहुँचे, तो वह दो बल्ब जला कर बैठा था। जैसे ही उन लोगों ने कमरे में प्रवेश किया तो उस कंजूस ने एक बल्ब बुझा दिया और पूछा कि कैसे आना हुआ। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के विस्तार के लिए कुछ चन्दे की आवश्यकता है इसीलिए हम आपके पास आये हैं। उस कंजूस ने पूछा – 'कितने रुपयों की आवश्यकता है।' 'आप पांच सौ रुपये दे दीजिये।' लोगों ने जवाब दिया।

उसने कहा – अभी देता हूँ और पचास हजार का चेक काट कर दे दिया। सारे लोग बहुत ही आश्चर्य में पड़ गये। तब उस कंजूस व्यक्ति ने कहा कि मैंने इसी काम के लिए इतना पैसा इकट्ठा किया था कि शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति हो। यह मेरा पहला चेक है। इसके पश्चात दूसरा, तीसरा और चौथा भी दूँगा। यदि और आवश्यकता हुयी तो और दूँगा क्योंकि इसी के लिए ही मैंने फटे कपड़े पहन कर जीवन--यापन किया।



शेर और खरगोश

एक जंगल में तरह–तरह के जानवर रहते थे। सबके बीच आपस में काफी प्रेम व सहयोग था। एक दिन खरगोश को धमाके की आवाज सुनाई दी जैसे कोई पहाड़ टूट गया हो। उसने जंगल के समस्त जानवरों हिरन, बतख, हाथी और भालू को जाकर बताया कि उसने विस्फोट होने जैसी आवाज सुनी है। लगता है कि यहाँ पर सब कुछ नष्ट होने वाला है, इसलिये यहाँ से भाग जाना ही बेहतर होगा।

यह सुन कर सभी जानवर जान बचा कर भागने लगे। तभी जंगल के राजा शेर को सबने यह बात बताई कि आप भी यहाँ से भाग कर अपनी जान बचाइये। शेर को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने इधर–उधर जाकर देखा तो उसे कोई भी ऐसी आवाज नहीं सुनाई दी।

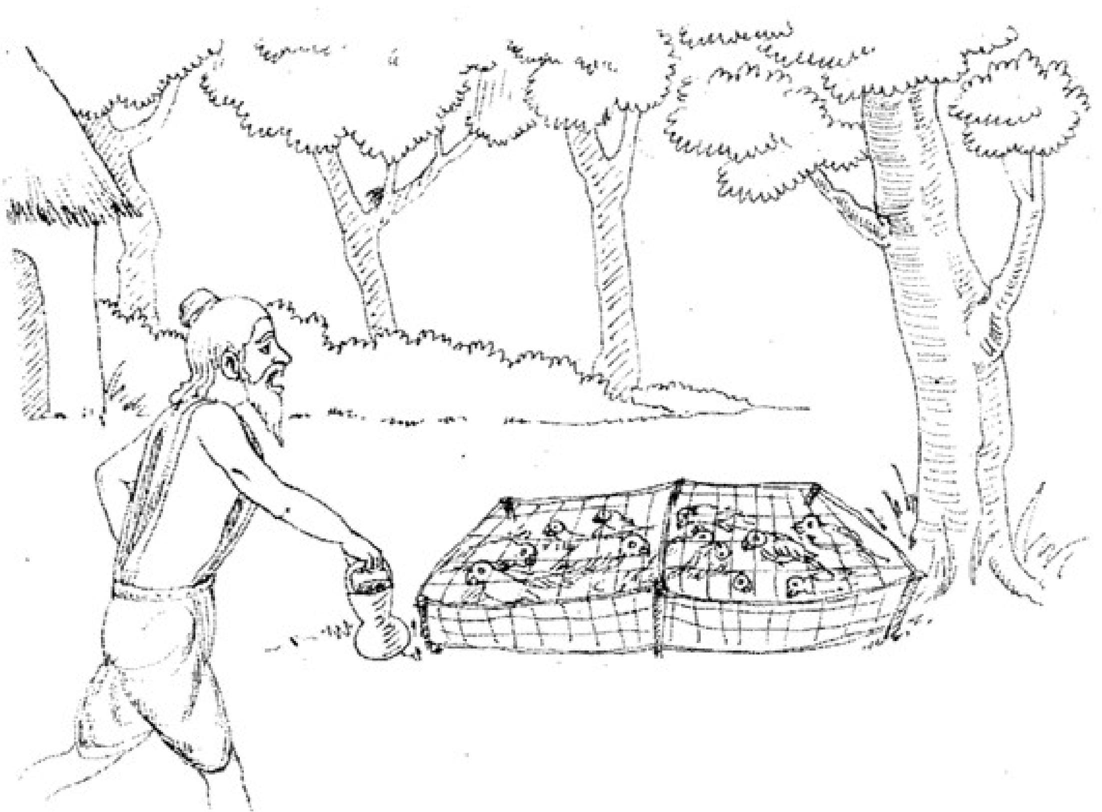


उसी समय उसकी निगाह एक अत्यन्त विशाल नारियल के पेड़ पर गयी, जहाँ पर एक–दो नारियल ऊपर से गिरे पड़े थे। शेर को समझ में आ गया कि खरगोश नारियल गिरने की आवाज से भयभीत हो गया है और उसने धमाके की आवाज को विनाश होने की बात समझ ली।

महात्मा जी व तोते

एक जंगल में महात्मा जी का आश्रम था, जहाँ पर अनेक तोते पेड़ पर रहते थे। तोतों को महात्मा जी जीवन के बारे में समझाते थे कि तुम सब अपनी रक्षा स्वयं करना सीखो। फिर उन्होंने बताया – "एक बहेलिया आयेगा, जाल बिछायेगा, दाने डालेगा, तुम सब उसमें फंसना मत।" तोतों ने यह शब्द रट लिए और उसको बार–बार दोहराते थे।

एक दिन अचानक एक बहेलिया आ गया, उसने जाल बिछा दिया, दाने डाल दिये। दाने देख कर तोतों से न रहा गया। वह खाने के लालच में आकर जाल में फंस गये। उसी समय, महात्मा जी आये। उन्हें तोतों की दशा देख कर बहुत दुःख हुआ। उन्होंने कहा कि जीवन भर हमने तुम सबको यह बताया था, उसके बाद भी तुम सब फंस गये। अर्थात् तुमने मेरी बात सुनी परन्तु उसका सार नहीं समझा।



अमृतपान

पुरातन समय में एक बार समुद्र मंथन के बाद अमृत प्राप्ति होने पर देवताओं एवं असुरों में यह चर्चा का विषय बन गया कि किसे अमृतपान करने का सुअवसर पहले प्राप्त होगा। यहाँ तक कि घमासान युद्ध होने की स्थिति हो गयी। ऐसे में दोनों ब्रह्माजी के पास अपना निवेदन लेकर पहुँचे।

ब्रह्मा जी ने एक युक्ति निकाली, जिसके अन्तर्गत समस्त देवताओं व असुरों के दोनों हाथों की कोहनी को सीधी रेखा की तरह गतिहीन कर दिया। साथ ही साथ परम स्वादिष्ट पकवान एक मेज पर सजा दिये। इस प्रकार खाने को कहा कि एक भी पकवान जमीन पर न गिरे तथा शान्ति से लोग खाने का आनन्द लें। सर्वप्रथम असुरों को खाने के लिए आमंत्रित किया गया। देखते ही देखते खाने के स्थान पर एक–एक करके पकवान मुँह में जाने की वजह जमीन पर गिरने लगे। इस प्रकार असुरों को अपनी शर्मनाक हार माननी पड़ी।

अब देवताओं की बारी आयी, उन्होंने दोनों हाथों से एक दूसरे को पकवान खिलाने शुरू कर दिये, जिससे उन्हें पकवान का आनन्द भी प्राप्त हुआ तथा कोई भी पकवान जमीन पर नहीं गिरा। इस प्रकार देवता खाने की प्रतियोगिता जीत गये। ब्रह्मा जी ने अमृत का घड़ा देवताओं को दे दिया।



राजकुमार

कुछ समय पूर्व एक राजा कुशलतापूर्वक शासन कर रहा था। राज्य में सब तरफ शांति व सौहार्द्रपूर्ण वातावरण था। उसका एक लड़का था जो देखने में सुन्दर, बलशाली व वीर था, परन्तु उसकी बुद्धि कमजोर थी। राजा ने अपने राजकुमार की बुद्धि बढ़ाने के लिए नाना प्रकार के उपाय, पूजा व यज्ञ किए, किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। आखिरकार राजा ने राजकुमार को एक अत्यन्त ज्ञानी महात्मा के पास शिक्षा के लिए दूरस्थ जगह भेज दिया।

कुछ वर्षो के बाद राजा ने राजकुमार की एक परीक्षा ली। राजा ने एक अँगूठी उतार कर अपनी मुट्ठी में बंद कर ली तथा राजकुमार से पूछा कि अब आप यह बताइए कि मेरी मुट्ठी में क्या? राजकुमार ने बहुत देर तक सोचा–मनन किया फिर कहा – "राजन! आपकी मुट्ठी में कोई ऐसी वस्तु है जो गोल तथा चक्की की पाट जैसी है।" राजा उसका उत्तर सुन कर बहुत निराश हुआ।

राजा इसलिए निराश हुआ कि वस्तु गोल है, परन्तु चक्की के आकार की चीज मुट्ठी में कैसे आ सकती है? प्रत्येक इंसान को किताबी ज्ञान दिया जा सकता है, पढ़ाया–लिखाया जा सकता है, लेकिन व्यावहारिक ज्ञान स्वयं आता है।



महात्मा व नाग

बहुत समय पूर्व एक गाँव में सिद्ध महात्मा आये। गाँव के लोगों ने सम्मानपूर्वक गाँव में रहने की उनकी व्यवस्था की। वह गाँव की खुशहाली के लिए प्रार्थना करते थे। एक दिन लोगों ने महात्मा को बताया कि गाँव के बाहर रास्ते में एक नाग रहता है जो कि अक्सर लोगों को डस लेता है, जिससे गाँव वाले अत्यन्त भयभीत हैं।

उन्होंने महात्मा जी से निवेदन किया कि अपने आशीष वचनों से उसका स्वभाव बदलने की कृपा करें। यह सुन कर महात्मा जी ने नाग को बुला कर समझाया। थोड़े समय में नाग बिल्कुल शांत स्वभाव का हो गया, बच्चे उसके साथ खेलने लगे, लोग नाग को रस्सी की जगह प्रयोग करने लगे। धीरे–धीरे लोग उस पर कंकड़ भी फेंकने लगे, परन्तु नाग शांत ही रहा और इस प्रकार दिन–ब–दिन कमजोर होने लगा।

फिर गाँव वाले महात्मा जी से मिले व उनको विस्तार से नाग के बारे में बताया कि नाग बहुत कमजोर व शिथिल हो गया है। शायद उसका बचना भी मुश्किल है। महात्माजी ने नाग को बुलाया व समझाया। महात्मा जी ने नाग से कहा कि मैंने आपको शान्त स्वभाव का जीव बनने का अनुरोध किया। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि आप फुँकार से डराने का कार्य छोड़ दें और लोग आपका नाजायज फायदा उठायें। आपको लोग कंकड़ मारें, तब भी आप लोगों को डराने के लिए फुँकार न मारे।

सीधा होना तथा शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करना एक बात है, परन्तु अपनी रक्षा करना भी महत्वपूर्ण है। प्रत्येक इंसान को अपनी रक्षा, अपने विवेक के अनुसार करनी चाहिए। उसके लिए शांति व संयम भी होना आवश्यक है।

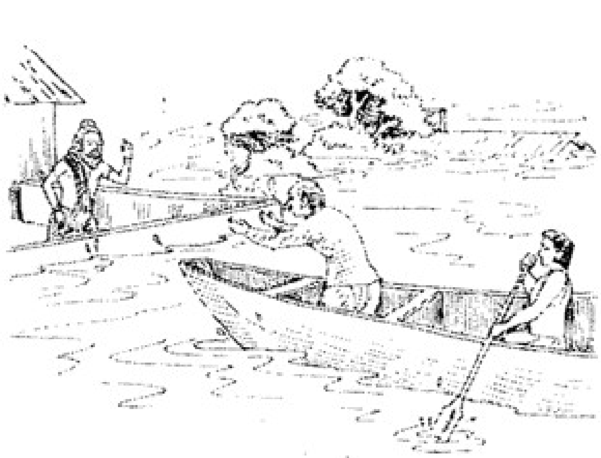


भक्त एवं दैविक आपदा

कुछ समय पूर्व गांव के मंदिर में एक साधू आकर रहने लगे। धीरे–धीरे महात्मा जी ने लोगों को ईश्वर के बारे में विस्तारपूर्वक गुड़ गान करके उनकी महिमा के बारे में बताना प्रारम्भ किया। लोगों में ईश्वर के प्रति श्रद्धा जागृत होने लगी। लोग पूजा–पाठ में भी समय देने लगे। गाँव में शान्ति व आपसी सहयोग का वातावरण बन गया।

एक दिन पास की नदी में बाढ़ आ गयी। धीरे–धीरे पानी का स्तर बढ़ने लगा। लोग एक नाव लेकर आये व महात्मा जी से सादर विनती करने लगे कि वह नाव में आकर अपना जीवन बचा लें, परन्तु महात्मा जी न माने। वह घर की पहली मंजिल पर चले गये। जल का स्तर कम होने की जगह और भी बढ़ गया तथा प्रथम मंजिल पर भी पानी आ गया। गाँव वाले फिर नाव लेकर आये तथा महात्मा जी से नाव में आने की विनती करने लगे, परन्तु फिर भी महात्मा जी नाव में नहीं आये। वह घर की दूसरी मंजिल पर जान बचाने का उपाय करने लगे। जलस्तर तेजी से बढ़ रहा था तथा दूसरी मंजिल तक आ गया। गाँव वाले पुनः तीसरी बार नाव लेकर महात्मा जी को लेने आये, इस बार भी महात्मा जी ने नाव में आने से मना कर दिया व ईश्वर–भक्ति में लीन हो गये। जलस्तर ज्यादा हो जाने से महात्मा जी की जलसमाधि हो गयी। महात्मा जी ने स्वर्ग जाकर ईश्वर से पूछा कि अपने अपने भक्त को बचाया क्यों नहीं?

ईश्वर ने कहा कि मैंने अपने भक्त को बचाने के लिए तीन बार नौका भेजी थी, परन्तु भक्त की समझ में नहीं आया। जो लोग विवेक से कार्य करते हैं, उन्हें ईश्वर की कृपा का फल प्राप्त होता है। अर्थात् ईश्वर उन्हीं की सहायता करते हैं, जो स्वयं अपनी सहायता समय पर अपने विवेक से करते हैं।



त्रिस्तरीय परीक्षण

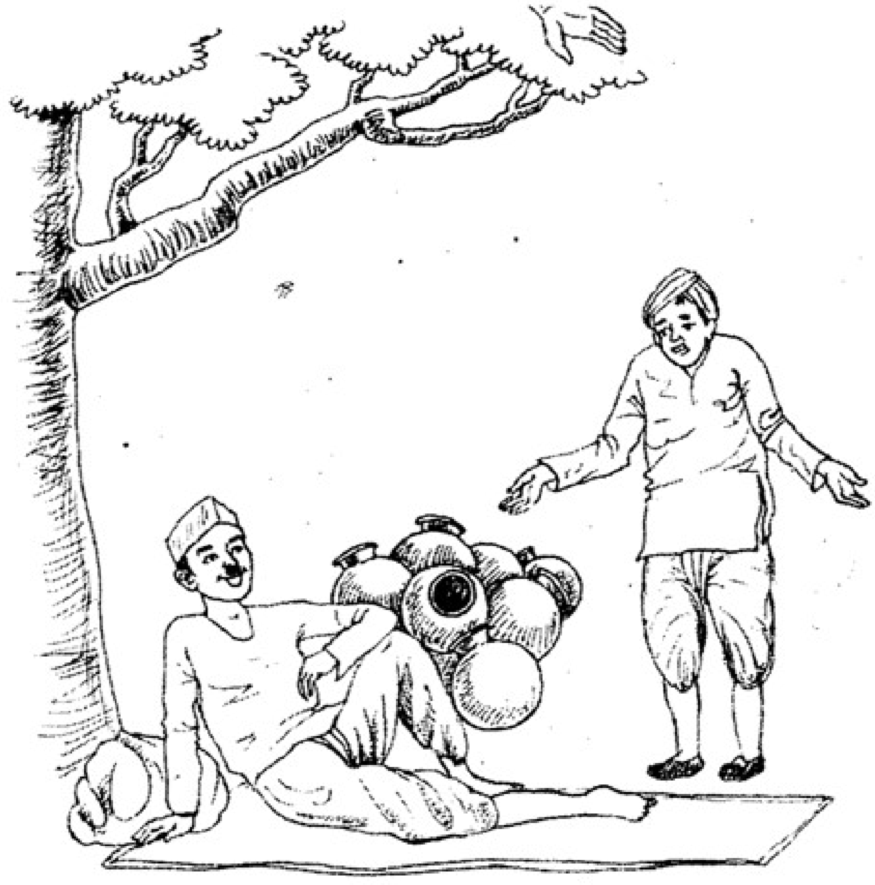
प्राचीन काल में सुकरात एक अत्यन्त ज्ञानी व सम्माननीय व्यक्ति ग्रीक में निवास करते थे। उनसे मिलने एक दार्शनिक आये तथा उन्होंने सुकरात को उनके एक मित्र के बारे में कुछ बताना चाहा। सुकरात ने उन्हें कुछ क्षणों के लिए रोका व उनसे अनुरोध किया कि जो भी कहना चाहते हैं, उसे तीन फिल्टर के माध्यम से छान कर कहें। पहले फिल्टर में सत्य है अर्थात् जो भी कहें, वह नितांत सत्य होना चाहिए। दूसरे फिल्टर में जो भी वाक्य कहें, वह अत्यन्त अच्छा होना चाहिए अर्थात् सुनने में अच्छा लगे। तीसरे फिल्टर के अन्तर्गत वाक्य की उपयोगिता होनी चाहिए, अर्थात् सुनने वाले के लिए वाक्य उपयोगी हो। सुकरात ने अंत में सारांश के रूप में कहा कि अगर आप जो मुझे बताने जा रहे, वह न तो सत्य है, न ही अच्छा है व न ही किसी रूप में मेरे लिए उपयोगी है, तब ऐसी बात मुझे क्यों बता रहें?



व्यापार से लाभ

कुछ समय पहले गर्मी के दिनों में एक व्यक्ति छायादार पेड़ के नीचे बहुत से घड़े व सुराही आदि बेचने हेतु आया। दोपहर होने पर पेड़ की छाया में एक चादर बिछा कर लेट गया। उसे गहरी नींद आ गयी। उसी समय एक सैलानी घड़े खरीदने के उद्देश्य से उसके पास आया तथा उसे जगाने की कोशिश करने लगा।

कुछ देर बाद घड़े बेचने वाला व्यक्ति नींद से जगा। सैलानी ने उससे कहा कि अगर तुम सोते रहोगे तो व्यापार कैसे करोगे। तुम्हारे समस्त ग्राहक वापस चले जायेंगे तथा तुम्हें व्यापार में लाभ नहीं मिलेगा। व्यापार में ज्यादा लाभ के लिए तुम्हें दिन में सोना नहीं चाहिए। ज्यादा से ज्यादा मेहनत करोगे तो ज्यादा लाभ मिलेगा। फिर तुम्हारे पास बड़ा मकान होगा और तुम शान्ति से आराम कर सकोगे।



लालच बुरी बला

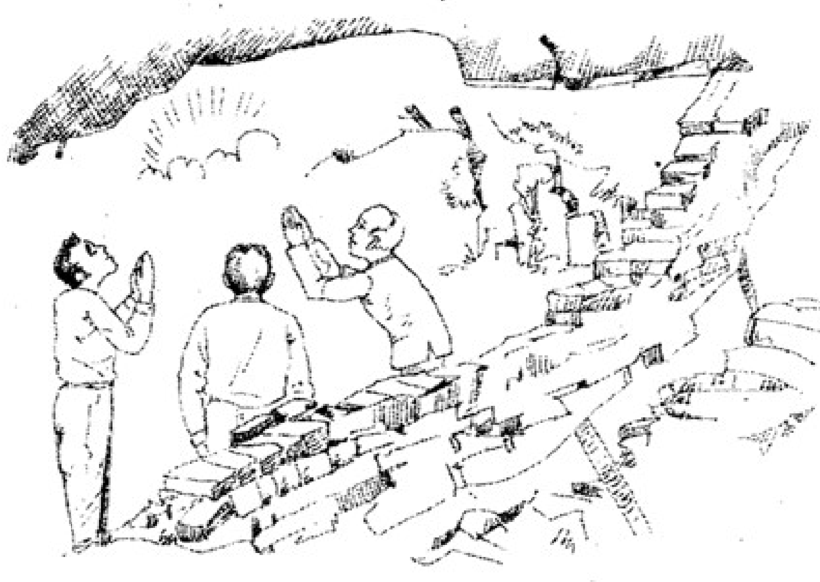
प्रातः मेरे साथ अक्सर कुछ मित्र भ्रमण में साथ होते हैं। परस्पर बातचीत में हम लोग जीवन के विभिन्न पहलुओं की चर्चा करते हैं। ऐसे में प्रायः एक दूसरे से कुछ न कुछ सीखने को प्राप्त हो जाता है।

एक ऐसी ही एक चर्चा के अनुसार एक व्यक्ति ने अपने ईष्ट देव से पूछा कि आपने पृथ्वी में विभिन्न प्रकार के लोग भेजे हैं। कुछ बहुत अमीर हैं, कुछ केवल अमीर हैं व कुछ बहुत गरीब हैं। क्या ऐसा नहीं हो सकता, सब अमीर हो जाये।

ईष्टदेव ने कहा जैसी तुम्हारी इच्छा। देखते–देखते सभी अमीर हो गये। सबके यहाँ सोने–चाँदी की वस्तुएं आ गयीं। सब सुख–चैन से रहने लगे।

कुछ समय बाद पास की नदी में भीषण बाढ़ आ गयी। मकानों की छत गिर गयीं तथा जिनके मकान क्षतिग्रस्त हो गये, वे पड़ोसियों के पास मदद के लिए गए। पड़ोसी जो कि पहले से ज्यादा अमीर हो गये थे, उन्होंने मदद के लिए आने से मना कर दिया व कहा कि गरीब मजदूर को बुला लो। गरीब मजदूर का नामो–निशान नहीं था।

जिनके मकान गिर गये थे, वे फिर अपने ईष्ट देवता के पास अपनी समस्या लेकर गये। उन्होंने ईष्टदेवता से कहा कि आपने जो पहले किया था, वही ठीक था, नया प्रयोग ठीक नहीं।



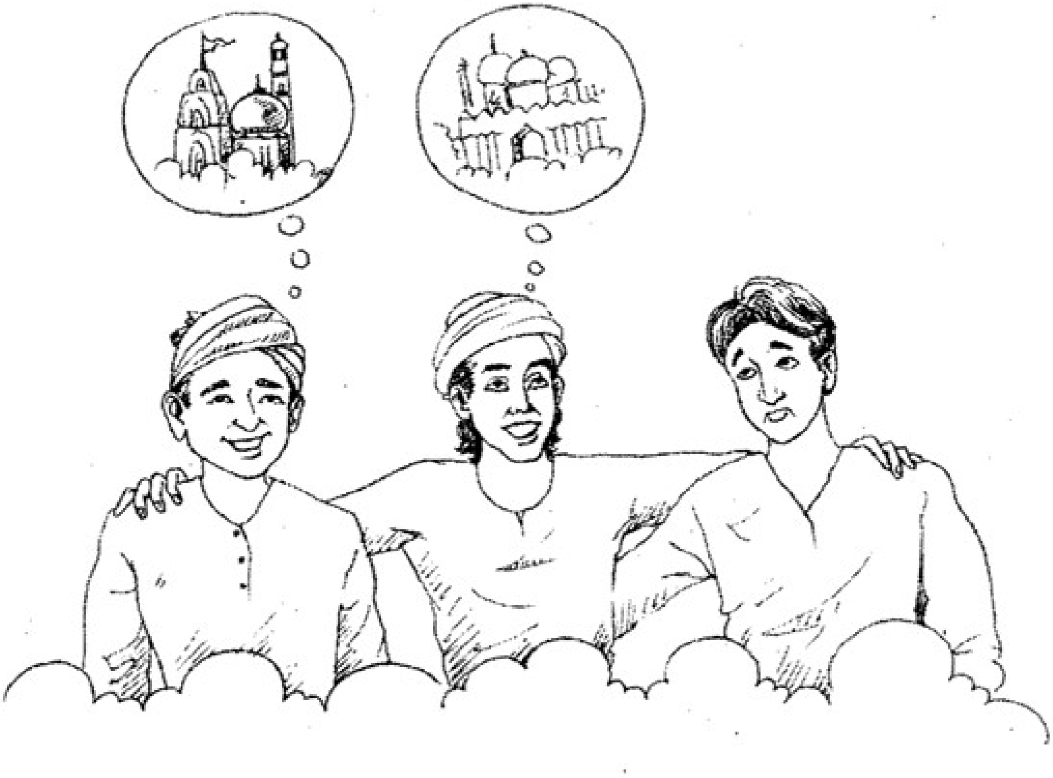
अनमोल है विश्वास

एक गाँव में तीन मित्र रहते थे, जिनके नाम इस प्रकार थे – ज्ञान, धन, व विश्वास। तीनों बहुत अच्छे दोस्त थे व तीनों एक दूसरे को चाहते थे। एक ऐसा समय आ गया कि तीनों को अलग होना पड़ा। तीनों ने एक–दूसरे से प्रश्न किया कि वे कहाँ जायेंगे?

ज्ञान ने कहा कि वह मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा व विद्यालय में जायेगा।

धन ने कहा कि वह महल या अमीरों के पास जायेगा।

विश्वास ने ठंडी आह भर कर कहा कि मैं एक बार चला गया तो फिर कभी वापस नहीं आ पाऊँगा, यह सुन कर दोनों अन्य दोस्त चुप हो गये।



सीखने की शर्त

जापान में रहने वाले एक ज्ञानी सन्त के पास बाहर के विश्वविद्यालय से एक आचार्य बुद्धिमानी के बारे में जानने के लिए पधारे। जापानी संत पुरुष ने बाहर आये आचार्य को देने के उद्देश्य से एक कप में चाय भरनी शुरू की। चाय कप में भर जाने के बाद भी सन्त पुरुष कप में चाय उड़ेलते रहे। आचार्य को बहुत आश्चर्य हुआ कि सन्त पुरुष चाय उड़ेलना बन्द क्यों नहीं कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कप चाय से भर चुका है और चाय इस कप में नहीं आयेगी।

संत पुरुष खामोश रहे। फिर सन्त पुरुष ने कहा कि चाय के कप की भाँति आपके अन्दर पुरानी जानकारी, विचार व चिन्तन भरे हुए हैं। मैं आपको समझदारी के बारे में तभी जानकारी दे सकूँगा, जब आपका कप खाली हो जाये।



भाग्य

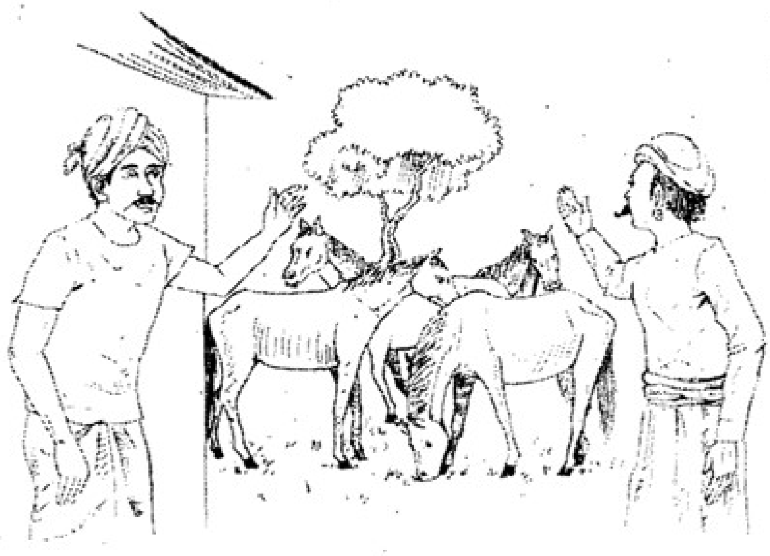
यह एक बुजुर्ग चीनी किसान की कथा है, जिसके पास एक घोड़ा खेत जोतने के लिए था। एक दिन घोड़ा पहाड़ों में गायब हो गया। किसान बहुत दुखी हुआ। उसके पड़ोसियों ने उसे समझाया तथा सहानुभूति भी दिखायी। उन्होंने कहा कि यह तुम्हारा बुरा भाग्य है। किसान ने कहा, बुरा भाग्य? अच्छा भाग्य? किसे मालूम है?

कुछ समय के बाद किसान का खोया हुआ घोड़ा अपने साथ कुछ और घोड़ों को ले आया। तब पड़ोसियों ने किसान से कहा – "आपका अच्छा भाग्य है।"

किसान ने कहा – "अच्छा भाग्य, बुरा भाग्य, किसे मालूम है?"

एक दिन किसान के बेटे ने जंगली घोड़े को पालतू बनाने की कोशिश करने में अपने पैर की हड्डी तोड़ ली। सबने इसे खराब भाग्य कहा। इस पर बुजुर्ग किसान ने कहा – "अच्छा भाग्य या बुरा भाग्य, इसकी किसे जानकारी है?"

कुछ दिनों के बाद गाँव में फौज में भर्ती करने के लिए गाँव के समस्त स्वस्थ जवानों को चुन लिया, परन्तु बुजुर्ग किसान के बेटे को जिसकी टाँग टूटी थी, उसे छोड़ दिया। किसान ने कहा – "अच्छा भाग्य या खराब भाग्य किसे मालूम है?" प्रत्येक कार्य अच्छा व खराब दोनों ही हो सकते हैं।



परख

कुछ समय पूर्व सोलोमन नाम का एक अत्यन्त चतुर राजा के सामने दो महिलाओं की समस्या लायी गयी। दोनों महिलाएं एक बच्चे को अपना बता रही थीं। राजा सोलोमन ने एक युक्ति सोची कि उसे दो बराबर भाग में बाँट कर एक–एक भाग दोनों महिलाओं को दे दिया जाये। यह जान कर पहली महिला ने राजा से कहा कि अगर उसे बेबी नहीं मिल सकता तो दूसरी महिला को भी बेबी प्राप्त न हो, अर्थात् आधा–आधा करना ही ठीक होगा।

दूसरी महिला ने कहा – "हे राजा, कृपया इस बेबी को चोट न पहुँचे। बेबी को पहली महिला को दे दें, जिससे बेबी चोट से बच जाये।" राजा समझ गया कि बच्चे की माँ कौन है। उसने उसे बच्चा दे दिया।



सड़क पर पत्थर

कुछ समय पूर्व पहाड़ पर एक सड़क का निर्माण किया जा रहा था। उसी समय एक बड़ा पत्थर सड़क के बीच में आ गया, जिससे निर्माण का सारा कार्य स्थगित कर दिया गया। राजा द्वारा बड़े–बड़े योग्य व अनुभवी इंजीनियर आदि से सलाह ली गयी कि कैसे इसे सड़क से हटाया जाये। वह इतना भारी था कि पहाड़ पर क्रेन द्वारा भी हटाना संभव नहीं हो पा रहा था।

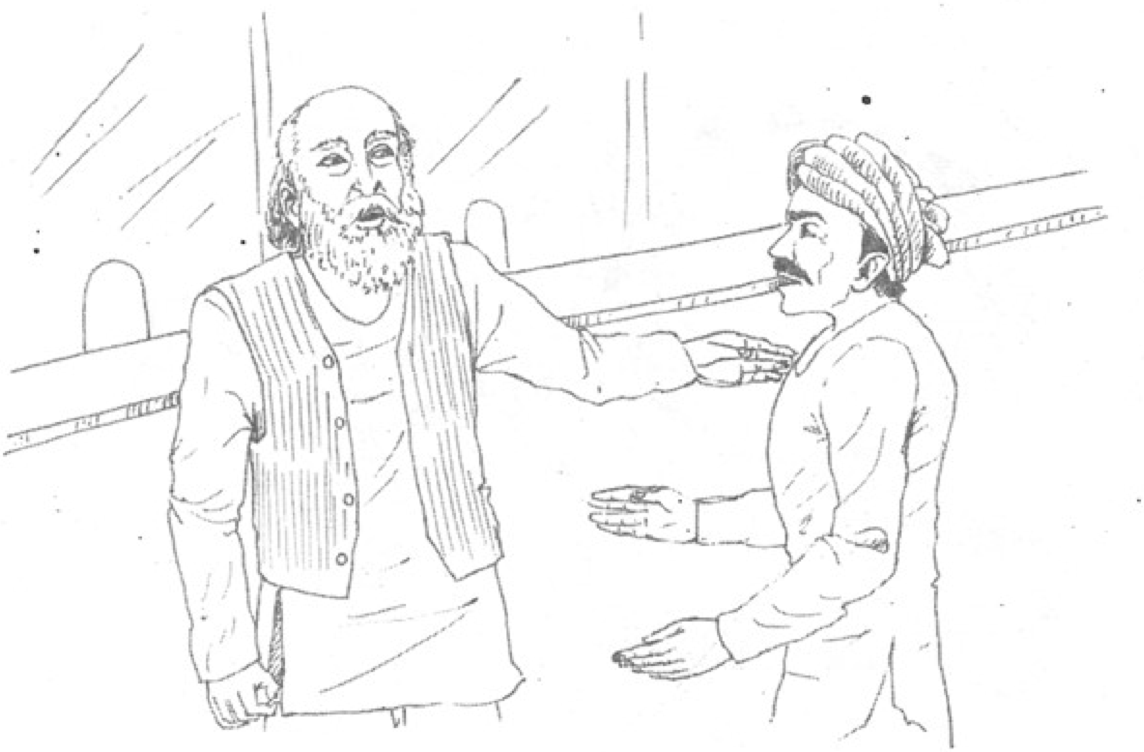
तभी एक गाँव का मिस्त्री आया। उसने कहा कि यह काम हम करवा देंगे। सबको बहुत आश्चर्य हुआ कि एक गाँव का मिस्त्री यह कार्य कैसे करवा सकेगा। मिस्त्री ने पत्थर की चारों तरफ से नाप ली तथा उसके आकार से थोड़ा सा बड़ा गड्डा सड़क पर खोदना प्रारम्भ कर दिया, जब गड्ढा पत्थर के आकार से बड़ा गया। तब कुछ लोगों की मदद से उसने उसे गड्ढे में धकेल दिया और उसके ऊपर मिट्टी व कंकरीट भर दी। इस प्रकार बड़ा पत्थर सड़क से एक साधारण मिस्त्री द्वारा हटा दिया गया।



राजर्षि की सरलता

यह घटना उस समय की है, जब राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन राज्यसभा के सदस्य थे। एक बार अपने भत्ते का चेक लेने वे राज्यसभा के कार्यालय गए। चेक लेकर टण्डन जी ने उसे लोक सेवा मण्डल के नाम हस्तान्तरित कर दिया। यह देख कर वहाँ बैठे एक महोदय से न रहा गया। उन्होंने कहा– "महोदय, आपको मुश्किल से भत्ते के चार सौ रुपए मिल पाये हैं, उन्हें भी आपने लोक सेवा मण्डल को दे दिया।"

टण्डन जी ने कहा – देखो भाई, मेरे सात लड़के हैं और सभी अच्छी तरह कमाते हैं। मुझे प्रत्येक पुत्र सौ रुपए भेजते हैं। मेरा खर्च लगभग तीन–चार सौ रूपये का होता है। शेष बचा हुआ धन मैं लोक सेवा मण्डल को भेज देता हूँ। फिर यह तो ऊपरी आय है, इसे मैं क्यों अपने लिए रखूँ?



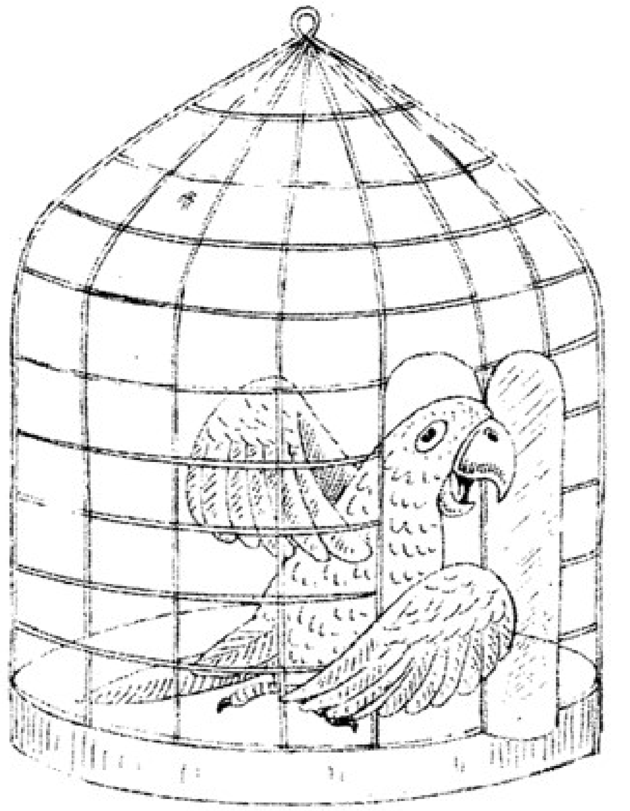
तोता की कथा

एक जंगल में सन्त के आश्रम में किसी ने पालतू तोते को पिंजड़े समेत पहुँचा दिया। संत ने तोते को मोक्ष का मार्ग बताया और नया वाक्य याद कराया– "पिंजड़ा छोड़ो, ऊँचे उड़ो।" तोते ने ये शब्द रट लिए।

एक दिन पिंजड़े का दरवाजा खुला रह गया, तोता खिड़की से बाहर सिर चमकाता और रटे हुए शब्दों को बोलता" – पिंजड़ा छोड़ो, ऊँचे उड़ो।"

आश्रमवासी इस कौतूहल को देख रहे थे कि द्वार खुला है। उड़ने से कोई रोक नहीं। मंत्र भी याद है फिर यह उड़ता क्यों नहीं? भीड़ को देख कर तोता पिंजड़े के कोने में क्यों छिपता है?

संत ने कहा कि हम में भी तो अनेक ऐसी ही तोता रटंत करने वाले लोग हैं। भक्ति का द्वार खुला होने पर भी बन्धन से निकलने का प्रयास नहीं करते, उल्टे धार्मिकता का भ्रम और फैलाते हैं।



वैज्ञानिक आइन्सटीन

बीसवीं सदा के महान वैज्ञानिक आइन्सटीन महारानी के निमंत्रण पर ब्रूसेल्स पहुँचे। महारानी ने अनेक उच्चाधिकारियों को उन्हें लेने के लिए स्टेशन भेजा, किन्तु सामान्य वेशभूषा और सीधे से आइन्सटीन को वे पहचान ही नहीं पाए और निराश लौट आए।

आइन्सटीन अपना बैग उठाए राजमहल पहुँचे और महारानी को अपने आने की सूचना भिजवाई। जब रानी ने अपने अधिकारियों की अज्ञानता के कारण हुई असुविधा के लिए खेद प्रकट किया तो वे हँसते हुए बोले – "आप जरा सी बात के लिए दुःख न करें, मुझे पैदल चलना बहुत अच्छा लगता है।"



विश्वास की कसौटी

एक महापुरुष ने नवीन जिज्ञासु को बुला कर कहा कि मैं मानता हूँ कि तुममें आतुरता है, जानने की चाह है और तुम्हारे अन्दर कुछ करने की भावना है, लेकिन बेटा अभी समय लगेगा। अभी सेवा में लगें रहो। उस शिष्य ने कहा – "गुरूदेव, फिर जल्दी से मुझे सेवा बताइये कि मुझे क्या–क्या करना है। उसके बाद मैं काम में लगूँगा। जब कभी कोई सेवक गुरू से कहता है कि सेवा बताओ, इसका मतलब है अभी उसमें कमी है।

उस महापुरूष ने सोचा कि इसको सेवा करनी होगी, इसलिए सेवा भी मुझे खोजनी होगी। उसने कहा कि एक काम करो। हम तुम्हें एक सेवा दे रहे है। तुम नदी के पार जाओ। वहां जंगल में एक कुटिया है। कुटिया के अन्दर एक महात्मा रहते हैं। उन्हें यह सामान दे आना, परन्तु एक बात का ध्यान रखना कि जो चीज तुम्हें दे रहें है, उसे खोल कर मत देखना।

उस शिष्य ने सोचा यह कौन सी बड़ी बात है यह तो बहुत छोटा काम है और डिब्बा उठा कर कुटिया की ओर चल दिया। रास्ते भर सोचता रहा कि इसमें क्या है जो चूँ–चूँ बोल रहा है, परन्तु वह उसे खोल नहीं



सकता था, क्योंकि गुरू जी ने मना किया था। वह चलता गया। एक स्थान पर उसे प्यास लगी तो उसने उस डिब्बे को रख दिया। फिर उसमें से चूँ–चूँ की आवाज आने लगी, तब उसने सोचा कि इसे खोल कर देख लिया जाये। गुरूजी की आंखे इतनी तेज तो है नहीं कि वह अपनी दिव्य दृष्टि से देख लेंगे।

उसने उस डिब्बे को खोला। जैसे ही उसने डिब्बा खोला, उसमें से एक चुहिया निकल कर भाग गयी और वह देखता ही रह गया। सोचने लगा कि इस जंगल में तो कोई दूसरी चुहिया मिलेगी भी नहीं। अब मैं क्या करूँ और उस डिब्बे को वैसे ही ले जाकर साधु को दे दिया। साधू को सब सच–सच बता दिया और पूछा कि चुहिया आपके पास क्यों भेजी?

इस पर साधु ने कहा कि वह चुहिया नहीं थी। वह महापुरुष का विश्वास था और वह विश्वास तुमने खो दिया। यदि बिना खोले वह डिब्बा मेरे पास ले आते तो तुम महापुरुष का विश्वास जीत लेते और वे तुम्हें अपना शिष्य बना लेते, परन्तु तुमने उनका विश्वास खो दिया। अमृत के जिज्ञासु को अपने गुरू के प्रति पूर्णतः श्रद्धान्वित होना चाहिए, तभी उसे सिद्धि प्राप्त होती है।

जान है तो जहान है

एक बार एक राजा शिकार के लिए जंगल में गया। राजा घोड़ा दौड़ाते–दौड़ते जंगल में भटक गया और प्यास से व्याकुल होकर ज़मीन पर गिर गया। किसी प्रकार खिसकते–खिसकते एक कुटिया के करीब पहुँचा और पानी मांगा। उसकी पुकार सुन कर कुटिया से एक साधु बाहर आया। बाहर आकर उसने देखा कि एक भव्य व्यक्ति प्यास से व्याकुल नज़रों से देख रहा है और पानी की इच्छा व्यक्त कर रहा है।

राजा को शिक्षा देने के उद्देश्य से संन्यासी बोला – "आप तो राजा मालूम होते हो। मैं आपको पानी दूंगा तो आप बदले में मुझे क्या देंगे?" राजा प्यास के मारे तड़प रहा था। राजा ने कहा – "आप जो मागेंगे, मै वह दूंगा। मुझे पानी दीजिए" और अपने गले से मोतियों की माला व जेवर निकाल कर उसे देने लगा। संन्यासी ने उसे रोकते हुए कहा कि आपने पानी का मूल्य बहुत कम लगाया है, आपकी जान बचाने वाले पानी के मुकाबले में ये जेवर इतने मूल्यवान नहीं। राजा बोला – "मैं अपना आधा साम्राज्य आपको दे दूँगा, पानी दीजिए" संन्यासी बोला – "आपकी जान के बदले सिर्फ आधा राज्य। राजन यह उचित मूल्याकंन नहीं है। आधे राज्य के बदले मैं आपको पानी नहीं दूँगा। राजा बोला – "यदि पानी नहीं मिला तो मर जाऊँगा। आप पूरा राज्य ले लीजिए, पर पानी देकर मेरे प्राण बचा लीजिए।"



संन्यासी मुस्कराया और बोला – "राजन! मैं राज्य लेकर क्या करूँगा। मैं तो पहले ही यह मोह–माया छोड़ कर आया हूँ।" एक लोटे पानी के बदले मैं यह क्या करूँगा। यदि जीवन है तो सब वस्तुओं का उपयोग है। जब जीवन नहीं रहेगा तो यह सब तो वैसे ही छूट जायेगा। फिर उसने उसे पानी पिलाया।

मन की शान्ति

एक बार भगवान विष्णु ने भक्तों पर कृपालु होकर अपनी सब चीजों को बाँटने का निश्चय किया और घोषणा कर दी कि जिसे जो चीज़ चाहिए, वह ले जाये। लेने वालों की वहाँ भीड़ लग गयी। सभी लोग कुछ न कुछ लेने को तैयार हो गये। आदमी के पास मांगने की पूरी सूची थी – एक मकान बन जाये, बच्चों की शादी हो जाये, फैक्ट्री ठीक से चल जाये। कोई कहता मुकदमा जीत जाये, कोई कहता चुनाव जीत जाये। लोगों ने ये ही सब चीजें मांगनी शुरू की।

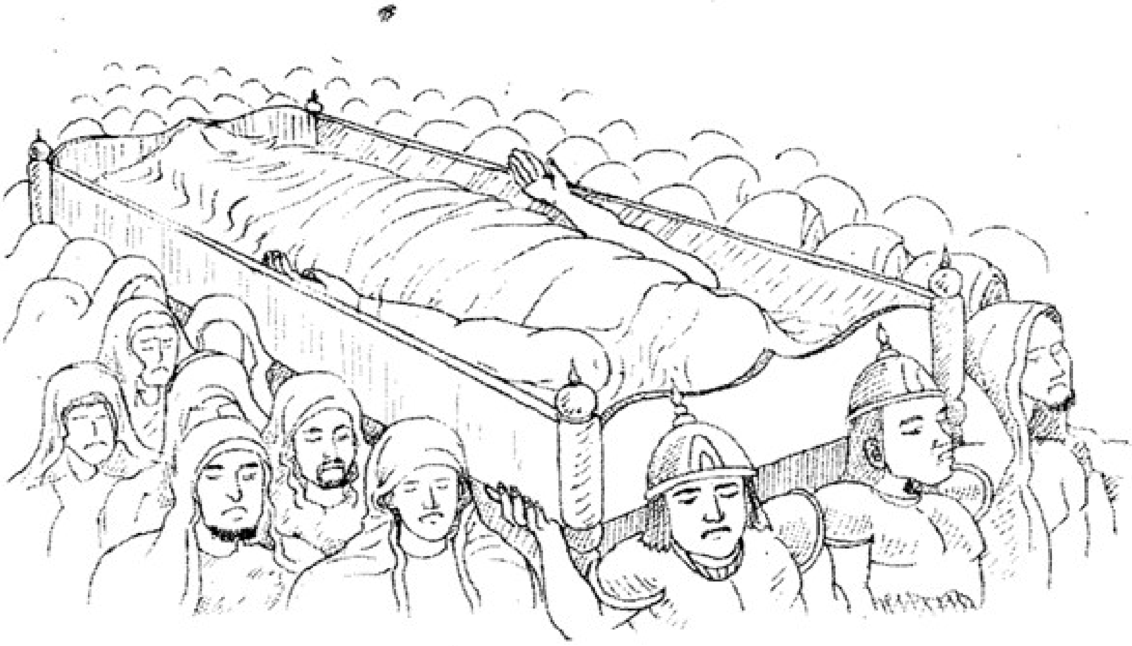
महालक्ष्मी जी को आश्चर्य हुआ कि विष्णु जी ये सब नादान और अयोग्य लोगों को बाँट दे रहे हैं। अपने पास कुछ भी नहीं रख रहे।

तब विष्णु जी ने कहा कि यह अपने सुख के लिए सब मांग रहे हैं, परन्तु एक चीज जो मेरे पास है, वह यह लोग मांग ही नहीं रहे। मेरे चरणों में जो शान्ति है, वह इनके पास नहीं है। जब शान्ति होगी तो वैभव भी नजर आयेगा। सब चीजें प्राप्त होने के बाद भी यदि मन शान्त नहीं होगा तो सब बेकार है। यदि ये शान्ति ले जाते, तो सब चीजें अपने आप प्राप्त हो जातीं।



सिकन्दर की अर्थी

सिकन्दर जब मरा तो उसकी अर्थी निकाली गई। हजारों–लाखों लोग अर्थी में शामिल हुए, लेकिन हर आदमी के मन में एक ही सवाल था कि सिकन्दर के हाथ अर्थी के बाहर क्यों लटके हुए थे? सभी लोग कहने लगे कि जब भी अर्थी को सजाते हैं तो उसके हाथ अन्दर ही होते हैं, परन्तु सिकन्दर के हाथ बाहर लटके रहे हैं। आखिर एक व्यक्ति ने इसका कारण जान ही लिया कि सिकन्दर ने स्वयं इच्छा रखी थी कि मेरे मरने के बाद मेरे दोनों हाथ अर्थी से बाहर लटका कर रखना ताकि लोग देख लें कि मैं भी खाली हाथ ही जा रहा हूँ।



दुःख सहने की शक्ति

एक बार राम जी बैठे हुए थे। धनुष हाथ में था। दूसरे हाथ में बाण पकड़े थे। उन्होंने जैसे ही बाण जमीन में गाड़ा और फिर निकाला तो देखा कि बाण में खून लगा हुआ है। खून देख कर राम जी अनुभव करने लगे कि किसी जीव को शायद यह बाण चुभ गया है। भूमि को खोदा, तो देखते हैं कि एक मेढ़क तड़प रहा है। उसके शरीर से खून बह रहा है।

इसे देख कर राम जी को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने मेंढ़क से पूछा कि इतनी बड़ी विपत्ति तेरे ऊपर आयी और तू बोला नहीं। एक बार बोलता तो सही कि बाण निकाल लो, मैं तेरा दुःख दूर कर देता। इस दुनिया में जिस किसी पर दुःख पड़ता है तो वह मेरा नाम लेता है।

मेंढ़क बोला – जिसको दुःख आप ही दे रहे हैं, वह किससे कहेगा कि बचा लो। इस प्रकार मुझे जो दुःख मिला है, वह मेरे कर्मों के कारण मिला है। आप तो अपनी ओर से देने वाले नहीं। आप से तो मैं एक ही बात कहूँगा कि जो दुःख आपने दिया है, उसे मुझे सहने की शक्ति दें।



सच्चा भक्त

नारद जी ने भगवान विष्णु से यह जानने की कोशिश की कि भक्तों में सर्वश्रेष्ठ भक्त कौन है। भगवान विष्णु ने कहा कि चित्रगुप्त के पास जाकर देखने का प्रयास करो कि भक्तों में सबसे ऊपर किसका नाम है। नारद जी ने देखा तो एक किसान का नाम सबसे ऊपर लिखा हुआ था। नारद जी को हैरानी हुई कि अच्छे–अच्छे संत महात्मा, अमीर, दानी व पुण्यात्माओं के बीच गाँव के किसान का नाम सबसे ऊपर क्यों है? उसमें क्या विशेषता है? भगवान ने कहा कि यह भक्त की निष्ठा और विश्वास है, जिसके कारण वह हर स्थिति को ईश्वर की इच्छा मान कर चलता है।

नारद जी ने जाकर किसान को देखा कि किसान सवेरे उठा और ईश्वर को याद करके कहने लगा कि हे परमात्मा, मुझे ऐसी शक्ति देना कि मैं आत्मनिर्भर रहूँ। मुझे किसी के सहारे की जरूरत न पड़े। वह घर के काम करता है। खेत में हल चलाता है। हर काम के साथ पहले ईश्वर को याद करता है। खाना खाने से पहले रोटी के पहले टुकड़े को जानवरों



व चिड़ियों को देता है, उसके पश्चात् वह स्वयं ग्रहण करता है। शाम को घर लौट कर ईश्वर को धन्यवाद देता है कि आज का काम सुख–शान्ति से निपट गया।

नारद जी ने देखा तो सोचा कि यह कोई नई बात नहीं है। ये तो सभी करते हैं। नारद जी उस दिन भी देखने गये, जब घटायें छा गयी और तेज ओले पड़ने लगे। सब किसान दुःखी हुये, परन्तु इस किसान ने भगवान से कहा कि तूने मुझे भूखा उठाया है परन्तु भूखा सुलाया नहीं, इसलिए मुझे तुझमें भरोसा है। बच्चों से कहने लगा यदि ईश्वर की यही इच्छा है कि हमें ओले खिलायें तो उस की मर्जी। हम इसे ही प्रसाद समझ कर खा लेते हैं।

नारद जी इस पर भी सन्तुष्ट नहीं हुए। भगवान ने कहा कि मेरा एक काम आ गया है। लो, यह एक कटोरा है। इसमें तेल भरा है। तुम सारे संसार का भ्रमण करके आओ, परन्तु इस कटोरे में जो तेल भरा है, उसमें से एक बूंद भी नहीं गिरनी चाहिए। यदि एक बूंद भी गिरी तो तुम्हारे पीछे एक तलवार लटक रही है और उससे तुम्हारा सर कलम हो जायेगा। नारद जी संभल–संभल कर चल रहे थे और पूरे संसार का भ्रमण करके आ गये, परन्तु एक बूंद भी तेल गिरने नहीं दिया। आकर भगवान जी से बोले – 'लीजिए यह कटोरा, हमने एक भी बूंद गिरने नहीं दी।'

भगवान ने पूछा कि संसार भ्रमण में क्या तुमने मुझे याद किया तो नारद जी बोले – 'नहीं, मैं तो आपका नाम लेना भूल ही गया। मैं तो अपनी पीठ पर तलवार और हाथ में तेल के कटोरे को ही याद करता रहा। मुझे मौत का डर ही सताये था। मैं आपको कैसे याद करता? इस पर भगवान जी बोले – ''तुझमें और किसान में यही फर्क है, इसीलिए किसान का नाम ऊपर है। वह विपत्ति और खुशी यानी हर समय मुझे ही याद करता है।''

विद्वान कौन

एक बार रामकृष्ण परमहंस से किसी ने सवाल किया कि आपकी नजर में इंसान यदि धनी हो तो क्या वह गुणवान है? परमहंस ने कहा कि वह शून्य है और पूछा कि यदि वह धनवान और साथ में ताकतवर भी हो, तो क्या वह गुणवान है। तो परमहंस ने कहा कि दो शून्य हो गया। यदि वह विद्वान भी। तो परमहंस ने कहा -- ''वह तीन जीरो के समान है। यदि कोई व्यक्ति बलवान, रूपवान, गुणवान है, शक्तिमान है, सत्तावान है तो?'' उतने ही जीरो जोड़ लेना। जीरो का जोड़ जीरो ही होता है।

अगर जीरो का जोड़ बढ़ाना हो तो उसमें एक जोड़ने से जीरो का जोड़ बढ़ जायेगा। एक है परमात्मा का नाम, उसके साथ में जुड़ जाने से कीमत अनेक गुना बढ़ जाती है। इसलिए भगवान को अपने साथ अवश्य जोड़ना चाहिए। फिर धनवान का धान, बलवान का बल, विद्वान की निष्ठा सभी गुण भगवान की ओर ले जाने वाले बनेंगे।

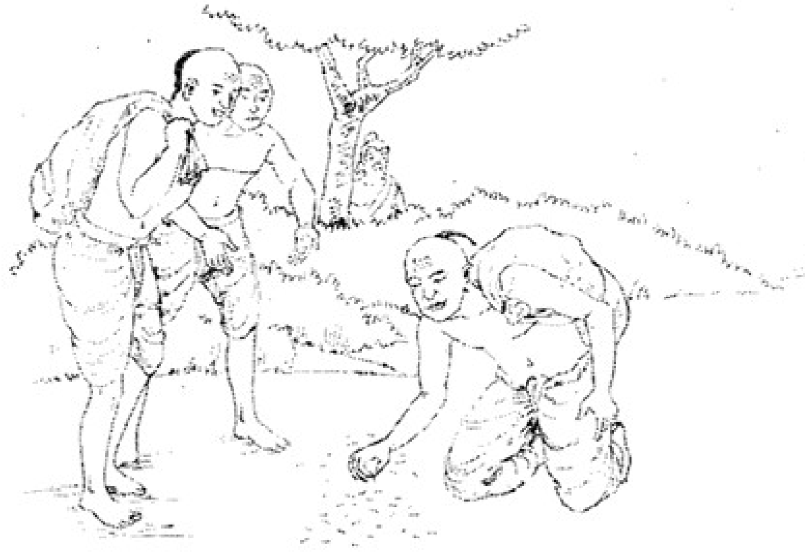


शिक्षक और शिष्य

एक गुरूकुल से तीन युवक परीक्षा दे वापस लौट रहे थे। केवल धर्म की परीक्षा शेष थी, परन्तु धर्म की परीक्षा नहीं ली गयी। आचार्य ने उन्हें उत्तीर्ण घोषित कर प्रस्थान करने को कहा। तीनों युवक गुरूजनों को प्रणाम आदि कर वापसी की यात्रा पर निकल पड़े। गुरूकुल से थोड़ा ही आगे बढ़े थे तो सूर्य ढ़लने लगा। थोड़ी ही राह चले होंगे तो उन्होंने देखा कि राह में कांटे फैले पड़े हुए हैं।

पहला युवक पगडंडी से छलांग लगा कर चला गया। दूसरा युवक पगडँडी के बजाय खेत से होकर आगे बढ़ गया, परन्तु तीसरा युवक कांटों को साफ करने लगा और राह में जितने भी कांटे थे, उन्हें अलग करने में लग गया। उसके मित्रों ने कहा, अब तुम किन झंझटों में उलझ गये हो। जल्दी से रास्ता पार करो और अपने घर की ओर शीघ्र पहुँचो।

इस पर तीसरे युवक ने कहा कि इसीलिए तो कांटे बीन रहा हूँ कि जब रात हो जायेगी तो अन्य यात्रियों को राह में कांटे दिखेंगे नहीं और वह घायल हो जायेंगे। उसके आचार्य तीनों की बातें सुन रहे थे। आचार्य ने तीसरे छात्र से कहा कि तुम धर्म की परीक्षा में भी उत्तीर्ण हो गये और तुम जाओ, संसार में फैले अंधकार को दूर करो। तीसरे युवक को इस प्रकार का संदेश देकर आगे बढ़ने को कहा तथा दोनों युवकों को अपने साथ वापस गुरुकुल में ले गये और कहा कि तुम लोगों की शिक्षा अभी अपूर्ण है।



वाहन एवं पत्थर

एक व्यापारी अपनी कार से कहीं तेजी से जा रहा था। वह अपने सोच में वाहन को तेज रफ्तार से चला रहा था। उसे यह भी डर था कि कोई बगल से सड़क पर न आ जाये। तभी किसी बच्चे ने एक पत्थर गाड़ी पर फेंका, जिससे वाहन के एक दरवाजे पर जोर से आवाज हुई और दरवाजे पर निशान बन गया। उसने वाहन को तुरंत रोक दिया और उतर कर उसका निरीक्षण करने लगा। वह अत्यंत गुस्से में था। उसने बच्चे को पकड़ लिया और उसको तेज आवाज में डांटने लगा।

बच्चा कांपने लगा और आँखों में आंसू भर कर कहा – "मेरा भाई व्हील चेयर से नीचे गिर गया है, उसे मैं स्वयं उठा कर व्हील चेयर पर बैठा नहीं सकता हूँ। उसे काफी चोट भी आयी है। व्यापारी ने गुस्से का घूँट पी लिया और उसके भाई के घावों को अपने रूमाल से साफ करके व्हील चेयर पर बिठा दिया। बच्चा व्हील चेयर के साथ अपने घर की तरफ चल दिया।

व्यापारी धीरे–धीरे भारी मन से अपनी गाड़ी की तरफ मुड़ा और कुछ सोचता हुआ वाहन पर बैठ गया। व्यापारी ने अपने वाहन पर पत्थर के निशान को रहने दिया।

व्यापारी अपनी गाड़ी पर हुये गड्ढे के बारे में सोचता रहा कि यह मुझे बार–बार याद दिलायेगा कि जीवन में बहुत तेज रफ्तार से जाने पर किसी को जरूरत पर रोकने के लिए पत्थर फेंकना जरूरी हो सकता है, जिससे हमारा ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो सके। कुछ पत्थर हल्के व मुलायम होते हैं। हमें जीवन में इसी प्रकार पत्थर मिलते रहते हैं, यह ध्यान रखना चाहिए।

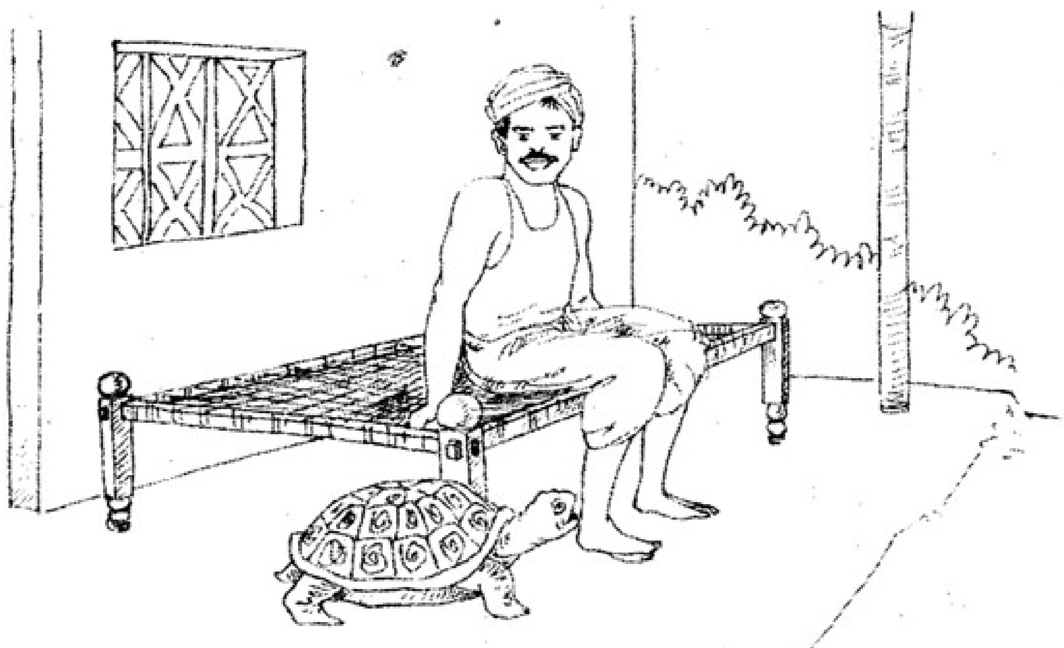


कछुआ से प्रेरणा

एक गाँव में नदी के किनारे एक वृद्ध किसान झोपड़ी में रहता था। वह ईश्वर का भक्त था। उसके साथ एक कछुआ भी रहता था। दोनों खाली समय पास–पास बैठते थे। दिन में किसान प्रतिदिन काम के लिए बाहर जाता था तथा वापसी में अपने साथ कछुये के लिये भी कुछ लाता था।

ऐसे ही समय बीत रहा था। एक दिन एक व्यक्ति उसकी झोपड़ी में आया और बोला – "यह कैसा खराब जीव–जन्तु तुमने पाल रखा है? इसे झोपड़ी से बाहर निकाल दो।"

वृद्ध किसान को सुन कर बहुत दुख हुआ, उसने कहा – "यह हमारे गुरु हैं। जरा सी आहट होने पर ये अपने समस्त अंग अंदर की तरफ सिकोड़ लेते हैं। यह हमें हर समय सिखाते हैं कि लालच–लोभ होने पर अपने हाथ–पैर सिकोड़ लो। बुराई से बचना चाहिए। हमारे गुरू यही शिक्षा रोज हमें देते हैं। इनके बारे में अपमानजनक बात आप न कहें।



महात्मा बुद्ध

महात्मा बुद्ध किसी गाँव में आये हुये थे। प्रवचन सुनने के उपरान्त एक व्यक्ति ने महात्मा बुद्ध से जानना चाहा – "आपने अपने प्रवचन में लोगों को सत्य, शांति व मोक्ष के सन्दर्भ में काफी कुछ बताया है। क्या आप बतायेंगे कि इन प्रवचनों से कितने लोगों को मोक्ष प्राप्त हुआ है?"

महात्मा बुद्ध ने जवाब दिया – "तुम इस गाँव में जाकर पता लगाओ कि कितने लोग शांति से रहते हैं। कितने लोग मोक्ष अथवा सत्य चाहते हैं?"

उस व्यक्ति ने कहा – "मैं गांव में घर–घर जाकर देखता हूँ। उसे गाँव में एक भी आदमी नहीं मिला जो मोक्ष चाहता हो! किसी ने कहा – धन चाहिये, किसी ने यश व किसी ने संतान की मांग की। महात्मा बुद्ध ने पास लौट कर उस व्यक्ति ने कहा – यह अजीब गाँव है। यहाँ सबकी इच्छायें अलग–अलग हैं। महात्मा बुद्ध ने क्या कहा?

"महात्मा बुद्ध ने कहा कि इसमें विचित्र क्या है। सभी सुख चाहते हैं, शांति नहीं और सुख के लिये नित्य नये–नये तरीके खोजते हैं। सुख से शांति का मार्ग कैसे मिलेगा? वत्स शांति में ही सत्य व मोक्ष है।



ईश्वर को खत

एक व्यक्ति पोस्ट आफिस में कार्य करता था, जहाँ उसे ऐसे पत्रों को भी देखना होता था, जिन पर सही पता नहीं लिखा होता था। उसे एक पत्र मिला जो ईश्वर को संबोधित था। लोगों को बहुत उत्सुकता हुई और उन्होंने पत्र खोल कर पढ़ा। पत्र में लिखा था – 'हे ईश्वर! मैं 85 वर्ष का बुजुर्ग विधुर हूँ, जो थोड़ी सी पेंशन पर निर्भर है। कल किसी ने मेरा पर्स चुना लिया, जिसमें सौ रुपये रखे थे। अब मेरे पास कुछ भी नहीं है। मेरे परिवार में भी कोई नहीं है। मैंने अपने मित्र को खाने पर बुलाया है। आप ही हमारी अंतिम आशा हैं। पत्र पढ़ कर पोस्ट आफिस में सभी लोगों को पत्र प्रेषक से सहानुभूति व दया हो गयी। सभी कर्मियों ने चन्दा इकट्ठा किया और उसे बुजुर्ग को भेज दिया। पोस्ट आफिस के सभी कर्मियों को उसकी मदद करते हुए अच्छा लगा।

कुछ दिनों के बाद ईश्वर के पते पर बुजुर्ग द्वारा पुनः पत्र भेजा गया, जिसमें उसने ईश्वर की उदारता की बहुत प्रशंसा की तथा बहुत धन्यवाद भी दिया, परन्तु यह भी कहा कि मेरे गुम हुये रुपये में चार रुपये आपने कम भेजे हैं। लगता है कि घटिया किस्म के लोग आपके यहाँ काम करते हैं।



सुपात्र व्यक्ति

एक बार एक शिष्य ने अपने गुरू से जानना चाहा– 'प्रत्येक व्यक्ति में असीमित शक्तियाँ हैं, फिर भी जीवन में वह क्यों गिरता–पड़ता रहता है।' गुरूजी ने अपना कमण्डल नदी में फेंक दिया और दिखाया कि वह ठीक प्रकार से तैर रहा है। फिर गुरूजी ने कमण्डल की तली में एक छेद कर दिया और दोबारा नदी में फेंक दिया, तब वह डूब गया।

गुरूजी ने इस प्रक्रिया को समझाते हुये इस प्रकार से बताया – असंयम के छेद हो जाने से दुर्गुण घुस जाते हैं और फिर मानव को डुबो देते हैं। गाय का दूध बर्तन की जगह छलनी में दुहा जाये तो दूध जमीन पर गिर जायेगा, गंदगी पैदा करेगा व पीने के लायक नहीं रहेगा। लाभ तभी है, जब दुहने का पात्र बिना छेद का हो। यानी उसमें कोई बुराई न हो।



विद्वता और अचारण

एक राजा के यहाँ विद्वानों का बहुत सम्मान होता था। उसके यहाँ अनेक विद्वान आते–जाते रहते थे। एक व्यक्ति के मन में यह जिज्ञासा पैदा हुई कि विद्वान अपनी विद्वता के कारण सम्मान पाता है अथवा आचरण के कारण? तभी पंडित जी ने राजा और मंत्री की उपस्थिति में एक स्वर्ण सिक्का उठा कर जेब में रख लिया। दूसरे दिन फिर उसने और स्वर्ण सिक्के उठा कर जेब में रख लिये।

मंत्री ने सोचा कि यदि इसी तरह पंडित जी रोज स्वर्ण सिक्का उठाते रहे तो एक दिन चोरी का आरोप उसी पर लग जायेगा। मंत्री ने राजा को बताया कि आप जिन्हें विद्वान बता कर सम्मान देते हैं, वह स्वर्ण सिक्कों की चोरी करते हैं। राजा ने तुरंत पंडित जी को चोरी की सजा सुना दी। पंडित जी ने कहा – "हे महाराज, मैंने सिक्कों की चोरी नहीं की है, मैं यह देखना चाहता था कि विद्वान का सम्मान उसके ज्ञान के कारण होता है या आचरण के कारण। इस गुत्थी को सुलझाने के लिये मैंने चोरी का नाटक किया।" सदाचार सबसे बड़ा गुण है। सदाचारी को हर क्षेत्र में सम्मान प्राप्त होता है। बेईमान का एक न एक दिन सर्वनाश होता ही है। राजा ने ससम्मान उन्हें मुक्त कर दिया।



लालच

मीरपुर गाँव में अनिल अपनी दादी के साथ रहता था। दादी उसको बहुत प्यार करती थीं और रोज सोते समय उसे तरह–तरह की कहानियाँ सुनाती रहती थीं। उसे ईमानदारी से रहने की शिक्षा देती थीं।

एक बार अनि बिनने गया। उसे वहाँ पर एक स्थान पर बहुत सारे चमगादड़ दिखे। वह उन्हें देख कर डर गया और भागता हुआ चला गया। उसे एक झोपड़ी दिखी। वह उस ओर भागा और उसकी छत पर चढ़ गया। उस झोपड़ी की छत बहुत कमजोर थी। वह धप से छत से नीचे झोपड़ी के अन्दर गिर गया। वहाँ वह बहुत सारे लोग बैठे थे जो अजनबी को देख कर डर गये। उस झोपड़ी में बहुत सारा सोना रखा था। उस सोने की पोल न खुल जाये, इसलिए उन लोगों ने कहा कि अजनबी, तुम इस झोपड़ी से जब चाहो, एक टुकड़ा सोना ले जा सकते हो।

इस प्रकार अनिल रोज उस झोपड़ी में आता और एक टुकड़ा सोना उठा कर ले जाता। जब जाता तो उसे वहाँ उतना ही सोना दिखायी देता। एक बार उसने सोचा कि रोज–रोज आने से तो अच्छा है कि मैं एक बार में सारा सोना ले जाऊँ। उसके मन में लालच आ गया। उसने सारा सोना एक बोरी में भरा और उसे ले जाने लगा। कुछ ही देर में वह सोना लेकर अपने गाँव पहुंच गया और बोरी खोल कर सोना दादी को दिखाने लगा।

अचानक वह सब सोना पत्थर हो गया। इस पर दादी ने उससे कहा कि तुमने लालच किया, इस कारण यह परिणाम हुआ। लालच करना बुरी बला है। दादी के कहने पर फिर वह बोरी उठा कर उसी झोपड़ी में रख आया और कहते हैं कि वह फिर सोना हो गयी।



आदर्श लघुकथाएँ

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'



संकल्प प्रकाशन